बच्चों का विश्व प्रसिद्ध उपन्यास

कठपुतला

कार्लो कोलोदी

सुबोध बाल सीरीज़-१२

कठपुतला

[विश्वप्रसिद्ध उपन्यास 'पिनोकियो' का अनुवाद]

सुबोध बाल पॉकेट बुक्स

© सुबोध पॉकिट बुक्स

प्रकाशक | सुबोध पॉकिट बुक्स, दरियागंज, दिल्ली-६
संस्करण | प्रथम, जून, १६७२
मुद्रक | प्रिंट आर्ट, नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२

मूल्य : एक रुपया

कठपुतला

एक था लकड़ी का टुकड़ा ! लकड़ी का यह टुकड़ा बूढ़े बढ़ई अन्तोनियो की दुकान में पड़ा हुआ था। अन्तोनियो ने मेज का एक पाया बनाने के लिए इस लकड़ी के टुकड़े को उठाकर बसूले से छीलना शुरू किया। उसने अभी बसूले की पहली ही चोट मारी थी कि एकाएक रुक गया। महीन आवाज में कोई कह रहा था, "इतनी ज़ोर से तो मत मारो।"

बढ़ई ने विस्मय से इधर-उधर देखा—दुकान में दूसरा कोई नहीं था। फिर यह आवाज किसकी है ? उसने सोचा, सम्भवतः मुझे भ्रम हुआ है। उसने फिर बसूला चलाना शुरू किया। पहली चोट पड़ते ही फिर वही आवाज, "हाय मार डाला, बड़ा दर्द हो रहा है !"

अबकी बार तो बढ़ई घबरा उठा। उसकी आंखें

फटी की फटी रह गईं और घिग्घी बंध जाने से बोलती बन्द हो गई। जैसी पतली वह आवाज पास से ही आ रही थी पर वहां तो न कोई बच्चा था न बूढ़ा। हिम्मत करके उसने फिर बसूला चलाना शुरू किया। आवाज़ तो फिर भी आई किन्तु उसने कोई परवाह न की और काम में लगा रहा।

छील-छालकर वह उसे रेगमार से रगड़कर चिकना करने लगा कि फिर वैसी ही आवाज कुछ हंसी के साथ सुनाई दी, "हं-हं-हं- बड़ी गुदगुदी हो रही है। अब बस भी करो।"

"लकड़ी का यह टुकड़ा ही मुसीबत की जड़ है!" यह कहते हुए उसने उसे एक कोने में फेंक दिया। मारे डर के उसके माथे से पसीना चूने लगा था। तभी किसीने दरवाजे पर थाप दी।

बढ़ई ने कहा, "अन्दर आ जाओ।"

किवाड़ धकेलकर एक हंसोड़-सा आदमी भीतर घुस आया। यह जेपेत्तो था। मुहल्ले के लड़के उसे 'पिलपिली' कहकर चिढ़ाया करते थे। भीतर आकर उसने बढ़ई को नमस्ते की और बोला, "बढ़ई चाचा,

आज मेरे मन में एक बात आई है। मैं लकड़ी का एक सुन्दर पुतला बनाऊंगा। फिर इसे लेकर दुनिया-जहान में लोगों को उसके खेल दिखाते हुए घूमूंगा और इस तरह दो रोटियां भी मिल जाएंगी। ठीक है न, बढ़ई चाचा?"

"शाबाश प्यारे पिलपिली।" लकड़ी के टुकड़े की ओर से आवाज़ आई।

जेपेत्तो ने समझा कि बढ़ई चाचा ने उसे चिढ़ाने के लिए ऐसा कहा है। वह बढ़ई पर बिगड़ने लगा। बढ़ई ने मना किया पर वह क्यों मानने लगा। वहां तीसरा तो कोई था नहीं। इस तरह उन दोनों में 'तू-तू-मैं-मैं' होने लगी। जब दोनों ठण्डे पड़े तो बढ़ई ने कहा, "अच्छा अब बताओ कि तुम मेरे पास कैसे आए थे?"

जेपेत्तो बोला, "कठपुतला बनाने के लिए मुझे लकड़ी का एक टुकड़ा चाहिए था।"

बढ़ई ने कोने में फेंका लकड़ी का वही टुकड़ा जेपेत्तो को देने के लिए उठाया। पर हुआ क्या कि लकड़ी का यह टुकड़ा उसके हाथ से छूटकर जेपेत्तो

की टांगों से जाकर टकराया।

चोट लगने से जेपेत्तो की चीख निकल गई। उसने समझा, बढ़ई चाचा ने इसे जोर से फेंका है। दोनों में फिर 'तू-तू-मैं-मैं' होने लगी। बढ़ई ने फटकार-कर जेपेत्तो को दुकान से बाहर निकल जाने को कहा तो वह बड़बड़ाता हुआ लकड़ी का टुकड़ा लेकर चला आया।

: २ :

जेपेत्तो एक अंधेरे-से कमरे में रहता था। घर में सामान के नाम पर टूटी खाट, बिना पीठ की कुर्सी और ढीले पायोंवाली एक मेज़ थी। इसके अतिरिक्त एक कोने में जलती हुई अंगीठी रखी था पर यह वास्तविक न होकर एक चित्र था।

जेपेत्तो अपने औज़ार निकालकर पुतला बनाने लगा। उसने सोचा, मैं इस पुतले का नाम पिनोकियो

रखूंगा। उसने पुतले का सिर, माथा और आंखें बनाईं। हद हो गई! आंखें बनते ही पुतला आंखों की पुतलियों को घुमाने-फिराने लगा जैसे कि सचमुच की आंखें हों। पुतले की आंखें जेपेत्तो को घूर-घूरकर देखने लगीं। यह देखकर जेपेत्तो तो दंग रह गया। फिर उसने छोटी-सी नाक बनाई पर वह तो देखते ही देखते लम्बी होने लगी। बढ़ी हुई नाक को जेपेत्तो काट देता पर वह फिर बढ़ जाती। जेपेत्तो हारकर पुतले का मुंह बनाने लगा। मुंह बनते ही पुतला खिलखिलाकर हंस पड़ा।

जेपेत्तो ने पुतले को डांटा, "बन्दरों की तरह खी-खी करके क्यों हंस रहे हो? चुप रहो!" पुतले ने डरकर हंसना बन्द कर दिया। अब जेपेत्तो ने गला, कन्धा, बांहें, छाती और पेट बना डाला। फिर ज्योंही उसने हाथ बनाकर पूरे किए कि पुतला जेपेत्तो के सिर के बाल खींचने लगा। जेपेत्तो के सिर की टोपी उठाकर उसने अपने सिर पर रख ली।

जेपेत्तो को गुस्सा आ गया। उसने चटाचट दो-तीन चांटे लगा दिए। किन्तु उसे जल्दी इसका बदला

की टांगों से जाकर टकराया।

चोट लगने से जेपेत्तो की चीख निकल गई। उसने समझा, बढ़ई चाचा ने इसे जोर से फेंका है। दोनों में फिर 'तू-तू-मैं-मैं' होने लगी। बढ़ई ने फटकार-कर जेपेत्तो को दुकान से बाहर निकल जाने को कहा तो वह बड़बड़ाता हुआ लकड़ी का टुकड़ा लेकर चला आया।

: २ :

जेपेत्तो एक अंधेरे-से कमरे में रहता था। घर में सामान के नाम पर टूटी खाट, बिना पीठ की कुर्सी और ढीले पायोंवाली एक मेज थी। इसके अतिरिक्त एक कोने में जलती हुई अंगीठी रखी था पर यह वास्तविक न होकर एक चित्र था।

जेपेत्तो अपने औजार निकालकर पुतला बनाने लगा। उसने सोचा, मैं इस पुतले का नाम पिनोकियो

रखूंगा। उसने पुतले का सिर, माथा और आंखें बनाईं। हद हो गई! आंखें बनते ही पुतला आंखों की पुतलियों को घुमाने-फिराने लगा जैसे कि सचमुच की आंखें हों। पुतले की आंखें जेपेत्तो को घूर-घूरकर देखने लगीं। यह देखकर जेपेत्तो तो दंग रह गया। फिर उसने छोटी-सी नाक बनाई पर वह तो देखते ही देखते लम्बी होने लगी। बढ़ी हुई नाक को जेपेत्तो काट देता पर वह फिर बढ़ जाती। जेपेत्तो हारकर पुतले का मुंह बनाने लगा। मुंह बनते ही पुतला खिलखिलाकर हंस पड़ा।

जेपेत्तो ने पुतले को डांटा, "बन्दरों की तरह खी-खी करके क्यों हंस रहे हो? चुप रहो!" पुतले ने डरकर हंसना बन्द कर दिया। अब जेपेत्तो ने गला, कन्धा, बांहें, छाती और पेट बना डाला। फिर ज्योंही उसने हाथ बनाकर पूरे किए कि पुतला जेपेत्तो के सिर के बाल खींचने लगा। जेपेत्तो के सिर की टोपी उठाकर उसने अपने सिर पर रख ली।

जेपेत्तो को गुस्सा आ गया। उसने चटाचट दो-तीन चांटे लगा दिए। किन्तु उसे जल्दी इसका बदला

मिल गया। उसने जैसे ही पुतले को टांगें और पैर बनाए पुतले ने कसकर उसकी नाक पर लात मार दी। जेपेत्तो अपना गुस्सा पीकर उसे चलना सिखाने लगा। ज्योंही उसने चलना सीख लिया कि भाग खड़ा हुआ। जेपेत्तो उसे पकड़ने के लिए पीछे भागा किन्तु पकड़ नहीं सका। शोर मचाते हुए जेपेत्तो ने लोगों से उसे पकड़ने को कहा पर सभी खड़े-खड़े तमाशा देखते रहे।

इतने में राह चलते एक सिपाही ने शोर सुना तो पिनोकियो का रास्ता रोककर खड़ा हो गया। पिनोकियो उसकी टांगों के बीच से निकल भागना चाहता था कि सिपाही ने उसकी लम्बी नाक पकड़ ली। इतने में जेपेत्तो भी हांफता हुआ आ पहुंचा। उसने झपटकर कहा, "मैं अभी तुम्हें इस शैतानी का मजा चखाता हूं," यह कहकर वह ज्योंही उसके कान पकड़ने लगा तो उसे मालूम हुआ कि वह तो उसके कान बनाना ही भूल गया है। वह पिनोकियो को गर्दन से पकड़कर झकझोरने लगा। तमाशा देखने-वालों की भीड़ के सामने अपना यह अपमान पिनोकियो

को बहुत अखरा। वह धरती पर लोटने और सिसकने लगा। लोगों को पुतले पर दया आ गई और उन्होंने उसे छुड़ा दिया। लोगों के कहने से सिपाही ने पिनोकियो को छोड़ दिया और जेपेत्तो को पकड़ लिया और थाने ले चला।

: ३ :

सिपाही के छोड़ते ही पिनोकियो सिर पर पांव रखकर भाग खड़ा हुआ और घर वापस आया। भीतर घुसकर उसने किवाड़ बन्द किए और चैन की सांस ली। इतने में एक झींगुर वहां गाना गाने लगा। पिनोकियो को यह बुरा लगा और उसने झींगुर को धमकाते हुए कहा, "शोर मत मचाओ। यह कमरा मेरा है। भागो यहां से!"

झींगुर बोला, "मैं यहां पिछले सौ सालों से रह रहा हूं। फिर भी तुम कहते हो तो दूसरी जगह चला

जाऊंगा परन्तु मेरी एक बात ध्यान से सुन लो—जो लड़के इस तरह घर से भागते हैं न, वे अच्छे नहीं होते। वे कोई ढंग का काम नहीं कर सकते और पीछे पछताते हैं।"

पिनकियो लापरवाही से बोला, "यह बकवास बन्द करो। मुझे तुम्हारी सलाह की जरूरत नहीं है। मैं तो कल ही यहां से भाग खड़ा होऊंगा। नहीं तो पापा मुझे स्कूल भेजेंगे। मेरा पढ़ने-लिखने को जरा भी मन नहीं है। मैं तो हर समय खेलते रहना चाहता हूं।"

झींगुर ने कहा, "हां, ठीक है भैया! तुम्हारे दिमाग तो है नहीं और पढ़ने के लिए दिमाग चाहिए। तुम्हारा सिर तो ठोस लकड़ी का बना है।" यह सुनते ही पिनोकियो का पारा चढ़ गया और उसने पास पड़ी हथौड़ी उठाकर झींगुर की ओर फेंकी और उसकी चोट से झींगुर मर गया।

पिनोकियो को जोर की भूख लगी हुई थी। उसने अंगीठी पर कुछ चीज पकती देखी। उसने ज्योंही हाथ बढ़ाकर उसे लेना चाहा तो पता चला कि यह

तो अंगीठी की तस्वीर है। वह बड़ा निराश और दुःखी हुआ और उसकी नाक बहने लगी। वह जब-जब दुःखी होता, उसकी नाक बहने लगती।

वह कमरे में इधर-उधर खाने के लिए कुछ ढूंढ़ रहा था कि उसे मुर्गी का एक अण्डा मिल गया। अण्डे को तोड़ते ही उसमें से चूजा बाहर निकला और फुर्र से उड़ गया।

पिनोकियो भूख के मारे रोने लगा। रोते-रोते बोला, 'झींगुर ठीक कह रहा था। घर से भागना बुरी बात है। इस समय पापा घर होते तो मुझे क्या भूखा देख सकते थे!' उसने सोचा, घर से बाहर निकलकर किसी से कुछ खाने के लिए मांगता हूं।

: ४ :

कड़ाके की ठंड पड़ रही थी और बर्फ गिर रही थी। इस अंधेरी रात में पिनोकियो रोटी मांगने के

लिए गांव की गलियों में घूम रहा था पर सभी सो थे। अंत में पिनोकियो ने डरते-डरते एक दरवाजा थपथपाया। ऊपर की खिड़की में से झांकते हुए एक बूढ़े ने डरते हुए पूछा, "कौन हो ? क्या चाहते हो ?"

पिनोकियो ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, "भूखा हूं। कुछ खाने को दीजिए। बड़ी कृपा होगी।"

बूढ़े ने कहा, "ठहरो देता हूं।" उसने सोचा, यह कोई शैतान लड़का है। इतनी रात को तंग करने आया है। इसे शैतानी करने का मजा चखाना चाहिए। उसने खिड़की में से झांकते हुए कहा, "लो टोपी को पकड़ो, उस में फेंकता हूं।"

पिनोकियो ने जैसे ही टोपी पकड़ी कि ऊपर से बाल्टी-भर ठंडा पानी उसके सिर पर आ पड़ा। ठंड के मारे पिनोकियो के दांत किटकिटाने लगे। भूख से वह पहले ही बेहाल था। निराश वह वापस घर लौट आया।

बर्फ पर चलने से उसके पैर सुन्न हो गए थे। वह उन्हें अंगीठी पर सेंकते-सेंकते ही सो गया।

अंगीठी की आंच से उसके लकड़ी के पैर जलने लगे पर उसे इसका कुछ पता नहीं चला। अचानक जोर से दरवाजा खटखटाने की आवाज सुनकर उसकी नींद टूटी। वह जंभाई लेते हुए बोला, "कौन है ?"

"दरवाजा खोलो, मैं हूं!" जेपेत्तो ने कहा।

"पापा, तुम हो ! ठहरो, अभी खोलता हूं।" पर जैसे ही उसने खड़ा होना चाहा, गिर पड़ा। अब उसे मालूम हुआ कि उसके पैर न जाने कहां गए ! वह रुआंसा-सा होकर बोला, "पापा ! दरवाजा कैसे खोलूं, मेरे तो पैर ही बिल्ली खा गई।"

"बाहर बर्फ पड़ रही है, मुझे तंग मत करो। उठकर दरवाजा खोलो।" उत्तर में पिनोकियो की रुलाई फूट पड़ी तो जेपेत्तो को लगा कि कुछ गड़बड़ ज़रूर है।

जेपेत्तो किसी तरह खिड़की के रास्ते भीतर घुसा। पहले तो वह पिनोकियो को खरी-खोटी सुनाता रहा किन्तु जब उसका ध्यान धरती पर गिरे पिनोकियो की ओर गया तो उसने उसे उठाकर छाती से लगा लिया और पूछा, "बेटा ! तुम्हारे पैर कैसे

जल गए ?"

पिनोकियो सिसकते हुए बोला, "पता नहीं पापा, कैसे जल गए। मैं रात अंगीठी पर पैर गरमाते सो गया था। शायद···पापा, अब बिना पैरों के मैं क्या करूंगा ? पापा ! मुझे बड़ी भूख लगी है।" जेपेत्तो ने अपनी जेब से तीन आड़ू निकालकर उसे दिए।

पिनोकियो ने तीनों आड़ू खाकर डकार मारते हुए कहा, "मैं तो अब भी वैसा ही भूखा हूं।"

जेपेत्तो के पास उसे देने के लिए और कुछ तो था नहीं। अब पिनोकियो अपने जले पैरों के लिए रोने लगा कि मेरे पैर बना दो।

जेपेत्तो उसके भाग जाने पर नाराज तो था ही। उसने सोचा, पैर ठीक होते ही यह फिर भागेगा। इसलिए अभी इसके पैर बनाने की जरूरत नहीं। उसने पिनोकियो से साफ मना कर दिया।

पिनोकियो ने रोते और गिड़गिड़ाते हुए कहा, "पापा, अब मैं कभी नहीं भागूंगा। कभी भी नहीं। अब मैं अच्छा लड़का बनूंगा। स्कूल में मन लगाकर पढ़ूंगा।"

जेपेत्तो को उसपर दया आ गई। उसने दो पैर बनाकर पिनोकियो के लगा दिए। नये पैर लगते ही पिनोकियो उठ खड़ा हुआ और कमरे में ठुमक-ठुमक नाचने लगा। फिर बोला, "पापा ! मैं कल स्कूल जाऊंगा पर मेरे पास पहनने को कपड़े तो हैं ही नहीं पापा !"

जेपेत्तो पिनोकियो को प्यार करता था और उसे किसी चीज से तंग नहीं रखना चाहता था। उसने पिनोकियो के लिए रंग-बिरंगे कागज के कपड़े बना दिए और पैरों के लिए छाल के जूते। रोटी के टुकड़े की कतर-ब्योंत करके पिनोकियो केलिए टोपी तैयार की गई। कपड़े-जूते पहनकर पिनोकियो खुशी से उछल पड़ा और बोला, "अब तो मैं बाबू साहब बन गया।" फिर क्षण-भर बाद बोला, "लेकिन पढ़ने के लिए किताब चाहिए। मेरे लिए एक किताब भी तो ला दो पापा !"

बेचारे जेपेत्तो के पास पहली किताब खरीदने के लिए भी पैसे नहीं थे। पर वह पिनोकियो का दिल दुःखाना भी नहीं चाहता था। कुछ सोचकर वह उठ

खड़ा हुआ, अपना फटा कोट पहना और बाहर निकल गया।

जब वह किताब लेकर वापस आया तो उसके ऊपर कोट नहीं था, एक कमीज थी और बाहर बर्फ का तूफान चल रहा था। पिनोकियो ने किताब लेते हुए पूछा, "पापा, तुम अभी-अभी कोट पहनकर गए थे। वह कोट कहां है ?"

जेपेत्तो ने मुंह फेरकर कहा, "कोट मैंने बेच दिया। वह फट चुका था और मुझे उसकी जरूरत भी नहीं थी।"

पिनोकियो से यह बात छिपी नहीं रही कि किताब खरीदने के लिए ही पापा ने कोट बेचा है। वह अपने अच्छे पापा के गले से लिपट गया और प्यार करने लगा।

: ५ :

जब बर्फ का गिरना थमा तो वह अपनी नई किताब लेकर स्कूल की ओर चल पड़ा। वह सोच

रहा था, "मैं एक दिन में पढ़ना सीख जाऊंगा, और एक दिन में लिखना। तीसरे दिन में जोड़-घटाव सीख जाऊंगा। पढ़-लिखकर अच्छा आदमी बनूंगा और खूब पैसे कमाऊंगा। पैसे हाथ में आते ही पापा के लिए बढ़िया गर्म कोट बनवाऊंगा। उसमें कीमती चमकदार बटन लगे होंगे। पापा ने मेरे लिए ही तो अपना कोट बेचा है और फिर झूठ-मूठ कह दिया कि मुझे उसकी जरूरत नहीं थी। अब बेचारे पापा ठंड में ठिठुरते हैं।' बस इसी तरह सोचते-सोचते वह अपने विचारों में डूबा चला जा रहा था कि उसे कहीं दूर से आता ढोल-ढमाके की आवाज सुनाई दी।

वह खड़ा होकर आवाज सुनने और सोचने लगा, 'जरूर कहीं तमाशा हो रहा है। पर मैं तो पढ़ने जा रहा हूं।' उसका मन कहता, चलो तमाशा देख आएं। उसकी अकल कहती यह ठीक नहीं है। तुम घर से निकले हो तो स्कूल जाओ। आखिर बहुत इसी तरह सोचते-विचारते उसकी अक्ल हार गई और मन जीत गया। उसने निश्चय किया, 'एक

दिन में क्या अन्तर पड़ता है। स्कूल तो रोज का ही है। तमाशा आज ही है। आज तमाशा देख आता हूं, कल से स्कूल जाऊंगा।' और वह उधर ही चल पड़ा जिधर से ढोल की आवाज आ रही थी। चलते-चलते वह एक चौराहे में जा पहुंचा। वहां लोगों की खूब भीड़-भाड़ थी। एक ओर एक रंग-बिरंगा तम्बू तना हुआ था और उसपर तस्वीरें बनी हुई थीं। दरवाजे पर लोगों की भीड़ थी। पिनोकियो ने वहां खड़े एक आवारा-से छोकरे से पूछा, "क्यों भई! यहां, क्या हो रहा है ?"

"लिखा हुआ तो है! पढ़कर देख लो।' छोकरे ने बड़ी बेरुखी से कहा।

"हां, ठीक कह रहे हो। मैं पढ़ तो लेता हूं पर आज पता नहीं मुझे क्या हो गया कि पढ़ नहीं पा रहा हूं।" पिनोकियो ने अपने अनपढ़ की बात को छिपाने के लिए कहा।

"तो यह बात है! चलो, मैं ही पढ़ देता हूं। लिखा है—कठपुतलियों का तमाशा।" उस आवारा-से छोकरे ने कहा।

"खेल शुरू हो चुका है क्या ?" पिनोकियो ने पूछा।

"अभी नहीं, थोड़ी देर है।" छोकरे ने कहा।

"टिकट कितना है ?" पिनोकियो ने दूसरा प्रश्न पूछा।

"सिर्फ पच्चीस पैसे। देखोगे क्या ?" छोकरे ने पूछा।

"स्कूली लड़कों के लिए तो आधा दाम होना चाहिए।" पिनोकियो बोला। उसका मन कठपुतली का तमाशा देखने के लिए मचल रहा था पर पास पैसा तो एक भी नहीं था। और बिना टिकट के कौन भीतर घुसने देता! उसने बड़ी ढिठाई से उस छोकरे से कहा, "क्या दादा! पच्चीस पैसे, उधार दे सकते हो ?"

"क्यों नहीं।" लड़के ने कहा और जेब से पच्चीस पैसे निकालते हुए बोला, "पता नहीं क्या बात है, मैं आज तुम्हें दे नहीं पाऊंगा।"

"चलो न सही उधार। तुम पच्चीस पैसे में मेरा कोट खरीद लो।" पिनोकियो बोला।

"वाह ! यह कागज का कोट मेरे किस काम का। जरा-सा भीगा कि खराब हुआ।" छोकरा बोला।

पिनोकियो की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। उसने किताब दिखाते हुए कहा, "इसे ले लो और पच्चीस पैसे दे दो। एकदम नई है। पापा आज ही खरीदकर लाए हैं।"

"तुम अपनी किताब अपने पास ही रखो। मुझे नहीं चाहिए।" यह कहकर वह लड़का तो चला गया किन्तु उन दोनों की बात सुनकर एक फेरीवाला पिनोकियो के पास आकर बोला, "दिखाओ कौन-सी किताब है तुम्हारे पास ? मैं देता हूं तुम्हें पच्चीस पैसे।"

पिनोकियो ने किताब उसके हाथ में दी और पचीस पैसे लेकर भागता हुआ टिकट की खिड़की पर जा पहुंचा। वह भूल गया कि इस किताब के लिए पापा को अपना कोट बेचना पड़ा था।

: ६ :

टिकट लेकर पिनोकियो तम्बू के भीतर बैठा ही था कि एक अनोखी घटना घटी। खेल शुरू हो चुका था और दो कठपुतलों की लड़ाई हो रही थी। वे दोनों एक दूसरे से मार-पीट और गाली-गलौच कर रहे थे। दर्शक उस तमाशे का मजा ले रहे थे। इतने में हुआ यह कि खेल दिखानेवाले हरले नामका पुतले की नजर पिनोकियो पर पड़ी। फिर तो वह लड़ना-भिड़ना छोड़कर एकटक उसीकी ओर देखने लगा। उसे उधर देखता देखकर दूसरा पुतला जेल्लो उधर ही देखने लगे। फिर वे दोनों पुतले जोर से चिल्ला पड़े, "देखो वह सामने तो पिनकियो बैठा हुआ है। पिनोकियो ! ओ पिनोकियो !!"

उनका यह शोर सुनकर पर्दे के पीछे से एक पुतली ने झांककर देखा और वह भी प्रसन्न होकर

चिल्ला पड़ी, "अरे हां, यह तो हमारा पिनोकियो है।"

बस, फिर तो बात ही बात में सारे पुतले और पुतलियां पर्दे के पीछे से मंच पर निकल आए और मारे प्रसन्नता के चिल्लाने लगे, "पिनोकियो आ गया ! हमारा पिनोकियो आ गया !! पिनोकियो जिन्दाबाद !!!"

सारे कठपुतले खेल दिखाना छोड़कर पिनोकियो को अपने पास बुलाने लगे। पिनोकियो भी उनसे गले मिलने मिलने के लिए कूदता-फांदता मंच पर जा पहुंचा। कठपुतलों ने उसे ऊपर उठा लिया और खुशी में शोर मचाते रहे। उधर जो लोग पैसे खर्च कर खेल देखने बैठे हुए थे, वे 'खेल शुरू करो' का शोर मचाने लगे। किन्तु कठपुतलों ने उनकी बात अनसुनी कर दी। यह हो-हल्ला सुनकर नाटक-कम्पनी का संचालक वहां आ पहुंचा। उसकी सूरत बड़ी डरावनी थी। बड़ी-बड़ी लाल अंगारों जैसी आंखें, घनी दाढ़ी-मूंछें और भारी बेडौल शरीर; उसे देखते ही सारे कठपुतले डर से कांपने लगे।

मंच पर सन्नाटा छा गया। उसने आते ही पिनोकियो को धर दबोचा और बोला, "तू कौन है, यहां क्यों आया ?"

पिनोकियो ने गिड़गिड़ाकर कहा, "जी, जी… मैं तो तमाशा देखने आया था। मेरा कोई अपराध नहीं है।"

संचालक ने अपनी भारी आवाज में कहा, "इधर आओ ! खेल के बाद तुम्हारी खबर लूंगा।"

: ७ :

कठपुतलों ने फिर से खेल दिखाना शुरू किया। खेल समाप्त होने पर संचालक रसोईघर में पहुंचा। वहां उसके लिए एक भेड़ भुनी जा रही थी पर आंच कम थी। भेड़ का मांस कच्चा था। उसने पिनोकियो को आग में झोंककर भेड़ भूनने का इरादा किया। पिनोकियो अपनी मौत सामने देखकर रोने-चिल्लाने

लगा। संचालक को उसपर दया आ गई। दया आते ही उसे छींकें आने लगीं। उसके मन में दया आते ही उसे छींकें आने लगती थीं। संचालक ने पिनोकियो को तो छोड़ दिया पर हरले को पकड़ मंगवाया। अब वह उसे आग में झोंकना चाहता था। पिनोकियो ने देखा कि मेरी जान तो बच गई पर मेरे बदले हरले को जान देनी पड़ेगी। उसके संचालक के पैर पकड़ लिए और हरले की जान की भीख मांगने लगा। जब संचालक किसी तरह नहीं माना तो पिनोकियो ने अपने मित्र हरले के बदले स्वयं को आग में झोंकने की बात कही। इस बात पर सभी पुतले उसकी प्रशंसा करने लगे। संचालक को भी दया आ गई और वह छींकने लगा। हरले का छोड़ दिया गया।

दूसरे दिन संचालक ने पिनोकियो को बुलाकर उसका घर का हाल-चाल पूछा। जब उसे पता लगा कि उसका पापा भीखमंगा है तो उसने पिनोकियो को पांच मोहरें देकर बिदा किया।

पिनोकियो ने संचालक का सात बार झुककर

सलाम किया और इस कृपा के लिए धन्यवाद किया। फिर वह सभी कठपुतलियों से मिला और घर की ओर चल पड़ा।

: ८ :

वह अभी थोड़ी ही दूर गया था कि उसे एक लंगड़ी लोमड़ी और अंधी बिल्ली मिली। वे एक-दूसरी की सहायता से चली जा रही थीं। लोमड़ी ने पिनोकियो को देखकर कहा, "पिनोकियो भैया! नमस्ते!"

बिल्ली भी बोल पड़ी, "पिनोकियो भैया! नमस्ते।"

पिनोकियो नमस्ते के उत्तर में 'नमस्ते' कहते हुए बोला, "क्यों जी, तुम्हें मेरा नाम कैसे मालूम हुआ?"

लोमड़ी बोली, "हम तो तुम्हारे पापा को भी जानती हैं। बेचारा कल अपने दरवाजे पर बैठा

ठिठुर रहा था।"

"अच्छा, मैं आज ही उनके लिए कोट खरीदकर लाऊंगा। अब उन्हें ठण्ड में ठिठुरना नहीं पड़ेगा। आज से हम अमीर बन गए हैं।"

इसपर लोमड़ी उसका मजाक उड़ाते हुए हंस पड़ी। उसे अपने ऊपर हंसता देखकर पिनोकियो ने कहा, "तुम इसे हंसी-मजाक समझ रही हो! पर यह देखो मेरे पास पांच मोहरें हैं।"

मोहरें देखते ही लोमड़ी ने अपना वह पंजा आगे कर दिया, जिससे वह लंगड़ाकर चलती थी और देखनेवालों की दया का पात्र बन जाती थी। पंजा बिल्कुल ठीक था। उधर अंधी बिल्ली ने भी मोहरें देखने के लिए आंखें खोल दीं और एक नजर मोहरों पर डालकर फिर बन्द कर लीं जिससे पिनोकियो को असली बात का पता न लगे। लोमड़ी जो किसी तरह इन मोहरों को हड़पना चाहती थी, बोली, "तुम इन मोहरों का क्या करोगे?"

पिनोकियो ने कहा, "पापा के लिए एक कोट बनाऊंगा और उसमें बढ़िया चमकदार बटन लग-

वाऊंगा। अपने लिए रंग-बिरंगी चित्रोंवाली किताब लाऊंगा। आखिर मुझे लिख-पढ़कर अच्छा लड़का जो बनना है।"

लोमड़ी बोली, "पढ़कर क्या करोगे? इस पढ़ने के चक्कर में ही तो मैं लंगड़ी हुई हूं।"

तभी बिल्ली बोल पड़ी, "मुझे ही देख लो; इस पढ़ाई ने मेरी तो दोनों आंखें ही फोड़ डालीं।"

इतने में डाल पर बैठी एक चिड़िया बोल पड़ी, "पिनोकियो भैया! इनकी बातों में मत आना। ये बड़ी मक्कार हैं। इनके कहने पर चलोगे तो पीछे पछताना पड़ेगा।"

चिड़िया को पोल खोलते सुनकर बिल्ली झट से पेड़ पर चढ़ गई और उसे खा गई।

पिनोकियो इस चिड़िया के मरने पर बड़ा दुखी हुआ। उसने बिल्ली से पूछा, "तुमने उसे क्यों मार डाला?"

बिल्ली बोली, "दूसरों की बात में बोलना ठीक नहीं होता। यह शिक्षा देने के लिए।"

बात बदलते हुए लोमड़ी बोली, "पांच मोहरों

से तुम्हारी सारी जरूरत कैसे पूरी होंगी ? क्या तुम इन्हें दूना, चौगुना, आठगुना करना चाहते हो ? पांच की पांच सौ या पांच हजार बनाना चाहते हो ?"

पिनोकियो बोला, "क्यों नहीं, पांच की पांच सौ कौन नहीं बनाना चाहेगा लेकिन यह कैसे होगा ?"

लोमड़ी बोली, "जैसे मैं बताऊं, तुम्हें वैसे ही करना होगा। अब घर जाने के बजाए तुम्हें हमारे साथ चलना होगा।"

पिनोकियो ने उत्सुकता से पूछा, "तुम्हारे साथ कहां, किस जगह जाना होगा ?"

"उल्लू के देश में।" लोमड़ी ने कहा।

क्षण-भर कुछ सोचकर पिनोकियो ने कहा, "नहीं, मैं तुम्हारे साथ नहीं जा सकता। मैं अपने घर जाऊंगा। पापा मेरे लिए उदास होंगे और राह देख रहे होंगे।"

लोमड़ी निराश होकर बोली, "तुम्हारी मर्जी, जहां चाहो जाओ। पर यह अवसर दोबारा नहीं मिलेगा। तुम घर आती दौलत पर लात मार रहे

हो।"

"हां, तुम घर आती दौलत पर लात मार रहे हो।" बिल्ली ने दोहराया।

"बस दो दिन की तो बात है। आज और कल में तुम्हारी पांच मोहरें बढ़कर पांच हजार हो जाएंगी।" लोमड़ी बोली।

"हां, पांच हजार हो जाएंगी।" बिल्ली ने दोहराया।

पिनोकियो ने कुछ सोचते हुए पूछा, "ऐसा कैसे हो सकता है !"

लोमड़ी काम बनता देख मुस्काई, "इसका उपाय मैं बताती हूं। उल्लुओं के देश में एक जादू का मैदान है। उस मैदान में अपनी एक मोहर बो देना और ऊपर पानी डालकर चुटकी-भर नमक बिखेर देना। दूसरे ही दिन वहां मोहरों का पेड़ उग आएगा। उसमें ढेर सारी मोहरें लटक रही होंगी। तुम उन्हें तोड़-तोड़कर थैले में भर-भर लेना। समझे ?"

पिनोकियो को यह अनहोनी बात सुनकर बड़ा

अचरज हुआ। उसके मन में पांच को पांच हजार बनाने का लालच आ गया। उसने कहा, "मैं तुम्हें भी इनाम में पांच सौ मोहरें दूंगा।"

"न भैया! हमें नहीं चाहिए इनाम की मोहरें।" लोमड़ी बोली।

"न भैया! हमें नहीं चाहिए इनाम की मोहरें!" बिल्ली ने दोहराया।

लोमड़ी बोली, "हम इनाम पाने के लिए तुम्हें थोड़े ही बता रही हैं। हम तो दूसरों की भलाई करना चाहती हैं।"

"हां, हम तो दूसरों की भलाई करना चाहती हैं।" बिल्ली ने दोहराया।

पिनोकियो ने मन में सोचा, दुनिया में कैसे-कैसे भले लोग पड़े हैं। ये दोनों कितनी भली हैं। सब काम दूसरों के भले के लिए करती हैं। वह उनके साथ उल्लुओं के देश को चल पड़ा। रात को वे एक सराय में जा ठहरे। उन्होंने निश्चय किया कि यहां से आधी रात को चल पड़ेंगे और सवेरा होते-होते जादू के मैदान में पहुंच जाएंगे। खा-पीकर तीनों

सो गए—लोमड़ी और बिल्ली एक कमरे में और पिनोकियो दूसरे में। पिनोकियो को तो सोते ही नींद आ गई और मोहरें बोने, सींचने और तोड़ने के सपने आने लगे किन्तु आधी रात को सराय के मालिक ने दरवाजा खट-खटाकर उसे जगा दिया। वह जगाकर बोला, "आपने जगाने को कहा था सो उठिए। आपकी दोनों साथिनें तो चली भी गईं। बिल्ली के घर से तार आया था। उसका बच्चा सख्त बीमार है। उन्होंने आपकी नींद खराब करना ठीक नहीं समझा। आप दोनों कमरों का किराया दीजिए और फिर जहां चाहें, जाइए।"

पिनोकियो की एक मोहर तो खाने और किराये में ही खर्च हो गई। वह अकेला ही चल पड़ा।

: ६ :

आधी रात का घना अंधेरा और सुनसान रास्ता। पिनोकियो डरता, ठोकरें खाता चलता जा रहा था। एक पेड़ पर उसे जुगनू जैसा चमकता हुआ जीव

दिखाई दिया। पिनोकियो उससे पूछने लगा, "अरे भई, तुम कौन हो और यहां क्यों बैठे हो ?"

वह चमकता जीव बोला, "मैं उस झींगुर का भूत हूं जिसे तुमने अपने कमरे में हथौड़ा फेंककर मार डाला था। तुमने उस दिन भी मेरी बात नहीं मानी थी। आज तो मान लो। तुम वापस घर लौट जाओ। जेपेत्तो, तुम्हारा पापा तुम्हें ढूंढ़ रहा है और रो रहा है। लोमड़ी और बिल्ली तो पक्की ठग हैं। तुम्हारी चार मोहरें लूटना चाहती हैं।"

"मैं इस समय जादू के मैदान को जा रहा हूं। वहां से ढेर-सारी मोहरें लेकर ही लौटूंगा।" पिनोकियो ने कहा।

झींगूर का भूत दो बार बोला, "अंधेरी रात में तुझे ये लूट लेंगी, इसलिए वापस लौट जाओ।"

पिनोकियो ने उसकी बात नहीं मानी और चल पड़ा। झींगुर की अच्छी सलाह उसे बुरी लगी। सच ही तो कहा है, जिसके बुरे दिन आते हैं, उसे अच्छी बातें बुरी लगती हैं।

कुछ दूर चलने पर पिनोकियो को खड़खड़ की

आवाज सुनाई दी। उसने मुड़कर देखा तो डर से उसकी घिग्घी बंध गई। माथे पर पसीना आ गया। दो लोग काला लबादा पहने और चेहरे पर नकाब पहने उसका पीछा कर रहे थे। वे छलांग लगाकर पिनोकियो पर झपटे। पिनोकियो को भागने का अवसर भी नहीं मिला। उनमें से एक ने आगे बढ़कर उसकी गर्दन दबोच ली और बोला, "पैसे निकालो नहीं तो अभी जान से हाथ धोने पड़ेंगे।"

पिनोकियो ने मोहरें अपने मुंह में छिपा रखी थीं। इसलिए वह बोल नहीं सकता था। वह गूंगे की तरह बार-बार सिर हिलाकर मना कर रहा था।

लुटेरों में से एक ने दांत किटकिटाते हुए कहा, "जल्दी करो, निकालो नहीं तो मरने के लिए तैयार हो जाओ।"

"हां, निकालो नहीं तो मरने के लिए तैयार हो जाओ।" दूसरे लुटेरे ने दोहराया।

पिनोकियो ने हाथ और सिर हिलाकर बहुतेरा मना किया पर लुटेरों ने एक नहीं सुनी।

एक लुटेरे ने पिनोकियो की गर्दन दबाते हुए

कहा, "जल्दी निकालो, नहीं तो हम तुम्हें और तुम्हारे पापा दोनों को मार डालेंगे।"

"हां, दोनों को मार डालेंगे।" दूसरे ने दोहराया।

पापा के मरने की बात सुनते ही पिनोकियो बहुत घबराया। वह बोल पड़ा, "मुझे चाहे मार डालो पर पापा को मत मारना।" यह कहने से मुंह में रखी मोहरें दांतों से टकराकर खनक उठीं।

लुटेरे चिल्लाए, "बड़े चालाक बनते हो! मुंह में मोहरें छिपा रखी हैं। जल्दी निकालो नहीं तो अभी गर्दन पर एक धौल पड़ेगी।"

पिनोकियो ने दोनों जबड़े जोर से मिलाकर मुंह बन्द कर लिया और अपनी जगह खड़ा रहा। वे दोनों उसपर टूट पड़े और उसे औंधे मुंह गिराकर हाथ से उसका मुंह खोलने लगे। पिनोकियो ने एक का हाथ काट खाया। उसके दांत भी तो कीलों के थे। उसने हाथ का अगला सिर एकदम काट डाला था पर यह तो बिल्ली का पंजा था। हाथ कटने से वह लुटेरा बिल्ली के स्वर में रोने लगा।

पिनोकियो को भागने का अवसर मिल गया।

परन्तु दोनों लुटेरों ने फिर उसका पीछा किया। पिनोकियो जब भागते-भागते थक गया तो एक पेड़ पर जा बैठा। वे दोनों भी पेड़ पर चढ़ने लगे तो पिनोकियो ने उन्हें धक्का देकर नीचे गिरा दिया। अब दोनों के खूब चोटें लगीं और खून बहने लगा पर वे एक नम्बर के बदमाश थे। उन्होंने लकड़ियां इकट्ठी करके पेड़ के नीचे ढेर लगाया और उसमें आग लगा दी। पिनोकियो बन्दर की तरह छलांग लगाकर दूसरे पेड़ पर जा पहुंचा। उन्होंने वहां भी उसका पीछा न छोड़ा। पिनोकियो फिर उतरकर भागने लगा। ये दोनों भी पीछे दौड़े। सुबह होने को थी पर ये बदमाश अब भी उसके पीछे पड़े हुए थे। पिनोकियो के रास्ते में एक गहरा नाला आ गया। उसने एक जोरदार छलांग लगाई और उस पार जा पहुंचा। दोनों बदमाशों ने भी छलांग लगाई पर छपाक से नाले के गन्दे पानी में गिर पड़े। उनके गिर पड़ने से पिनोकियो बड़ा प्रसन्न हुआ पर वे दोनों तैरकर उस पार जा पहुंचे। पिनोकियो फिर भाग खड़ा हुआ। आगे वह और पीछे ये दोनों।

पिनोकियो दौड़ते-दौड़ते थककर चूर हो चुका था। अब उससे दौड़ा नहीं जाता था। उसे लगा कि इन गुण्डों से बचना कठिन है। तभी उसे कुछ दूर पेड़ों के पीछे एक मकान दिखाई दिया वह उस मकान की ओर दौड़ पड़ा। दोनों गुंडे अब भी उसका पीछा कर रहे थे। वह हांफता-हांफता मकान के दरवाजे पर जा पहुंचा और जोर से उसे खटखटाने लगा। ऊपर की खिड़की से एक लड़की ने झांककर देखा और बोली, "यहां कोई नहीं रहता। सब मर गए हैं।"

"तुम तो जीवित हो। तुम्हीं खोल दो न। बदमाश मेरे पीछे पड़े हुए हैं। जल्दी करो।" पिनोकियो ने घबराए हुए स्वर में कहा।

"मैं भी तो मरी हुई हूं। अभी कब्रिस्तान पहुंच जाऊंगी।" उस लड़की ने उत्तर दिया और भीतर चली गई। इतने में पीछे से दोनों गुण्डों ने उसकी गर्दन धर दबाई। वह थर-थर कांपने लगा। एक लुटेरा उसकी गर्दन दबाने लगा जिससे वह मुंह खोल दे और मोहरें गिर पड़ें। पर पिनोकियो ने मुंह नहीं

खोला। आसानी से काम बनते न देखकर दोनों गुण्डों ने चाकू निकाल लिए और पिनोकियो पर टूट पड़े पर वह तो लकड़ी का बना था इसलिए उसका कुछ न बिगड़ा। हां, उनके चाकू जरूर मुड़ गए। अन्त में एक लुटेरा बोला, "यह चाकू से नहीं मरेगा। इसे फांसी चढ़ाते हैं।"

"हां, इसे फांसी चढ़ाते हैं।" दूसरे ने दोहराया। दोनों ने मिलकर पिनोकियो के हाथ कसकर पीछे बांध दिए और गले में कसकर रस्सी बांधकर पेड़ की शाखा से लटका दिया। और फिर वे दोनों पास बैठकर देखने लगे कि कब यह मरे और कब हम इसकी मोहरें छीनें। पर पिनोकियो छूटने के लिए हाथ-पैर मारता रहा और आंख भी झपकता रहा। गुंडों ने सोचा कि यह जल्दी नहीं मरेगा। इसलिए वे उठकर चले गए।

गले की रस्सी के कारण पिनोकियो का दम घुट रहा था। वह रस्सी से लटका इधर-उधर झूल रहा था। उसका सिर चकराने लगा और आंखों के आगे अंधेरा होने लगा। फिर भी वह किसी तरह

जोर से 'बचाओ-बचाओ' की पुकार लगाने लगा। उसे बचाने कोई नहीं आया। उसकी आवाज धीमी पड़ती गई और बन्द हो गई।

: १० :

पिनोकियो मरा-सा रस्सी से लटका हुआ था कि इतने में उस लड़की ने फिर झांककर देखा। उसने आश्चर्य से देखा कि अभी कुछ देर पहले जो कठपुतला दरवाजा खोलने को कह रहा था, उसे किसी ने फांसी पर लटका दिया है। उसने तीन बार ताली बजाई। ताली बजते ही एक बाज आया और उसने दोनों डैने फड़फड़ाकर लड़की को नमस्ते कहा। फिर बोला, "क्या आज्ञा है ?"

यह लड़की एक परी थी और जंगल के सभी पशु-पक्षी उसकी आज्ञा मानते थे। उसने बाज को कहा, "जाकर उस कठपुतले को फांसी से नीचे

उतारो।"

बाज गया और अपनी चोंच से रस्सी काटकर और कठपुतले को उतारकर घास पर लिटा आया। परी ने फिर तीन बार ताली बजाई तो एक कुत्ता आ खड़ा हुआ। उसने कुत्ते को आज्ञा दी,, "गाड़ी लेकर जाओ और पेड़ के नीचे घास पर पड़े कठपुतले को उठा लाओ।" कुत्ता कठपुतले को गाड़ी पर बिठाकर ले आया। इस गाड़ी को सौ चूहे खींच रहे थे और कुत्ता गाड़ीवान बना हुआ था।

परी पिनोकियो को गाड़ी पर से उठाकर अन्दर ले गई और बिस्तर पर लिटा दिया। जंगल के डाक्टरों, कौए, उल्लू और झींगुर ने उसकी परीक्षा शुरू की। कौआ डाक्टर बोला, "मेरे विचार में तो यह मर चुका है किन्तु हो सकता है कि अब भी जीवित हो।" उल्लू डाक्टर ने कहा, "मुझे बड़े खेद से कहना पड़ता है मेरी सम्मति अपने साथी प्रसिद्ध डाक्टर कौए से अलग है। मेरे विचार में यह अभी जीवित है किन्तु हो सकता है अब मर भी जाए।" यह सुनकर तीसरे डाक्टर झींगुर ने दोनों डाक्टरों को सलाह

दी कि यदि वे इस केस को ठीक-ठीक समझ नहीं पा रहे हैं तो कृपा करके चुपचाप बैठे रहें। अब मैं आप को सही-सही बता दूं। वास्तव में यह कठपुतला न मरा है, न जीवित है। यह कठपुतला है। मैंने इसे पहले भी कहीं देखा है।"

डाक्टर झींगुर की बात सुनते ही पिनोकियो तत्काल उठ बैठा और तत्काल फिर लेट गया। झींगुर ने फिर कहा, "यह कठपुतला दस नम्बरी बदमाश है। आवारा और बुद्धू।" यह सुनकर तो पिनोकियो ने मारे शर्म के अपना मुंह ढक लिया। डाक्टर बोलता रहा, "यह अपने पापा तक का कहना नहीं मानता और आवारा घूमता रहता है।"

अब तो पिनोकियो सिसक-सिसककर रोने लगा डाक्टर कौए ने कहा, "मरा हुआ आदमी अगर रोने लगे तो समझ लीजिए कि वह जल्द ही चंगा हो जाएगा।" उल्लू डाक्टर की राय अब भी कौए से अलग थी। वह बोला, "मेरे विचार में मरा हुआ आदमी जब रोने लगता है तो समझना चाहिए कि उसे अपने मरने का अफसोस है।"

परी ने तीनों डाक्टरों को फीस देकर विदा किया। फिर जब पिनोकियो के सिरहाने आकर बैठी और उसके सिर पर हाथ रखा तो उसका माथा बहुत गर्म था। परी उसके लिए दवा बनाकर ले आई और पीने को कहा।

पिनोकियो ने गिलास पकड़ते हुए पूछा, "यह दवा कड़वी है या मीठी? मैं कड़वी दवाई नहीं पिऊंगा।"

परी ने समझाया कि दवाई का स्वाद नहीं देखा जाता। यह दवाई कड़वी जरूर है, पर है, बड़ी अच्छी। तुम दवाई पी लो फिर तुम्हारा स्वाद बद-लने के लिए मैं तुम्हें मिश्री दूंगी।"

पिनोकियो ने मुंह फुलाकर कहा, "पहले मिश्री दो तब दवा पिऊंगा।"

परी ने मिश्री की डली दी तो पिनोकियो ने झट चबा डाली। और फिर मांगने लगा। परी ने उसे डांट दिया। पिनोकियो ने दवाई का गिलास होंठों से लगाए बिना ही कहा, "बड़ी कड़वी है। मैं नहीं पिऊंगा। मिश्री की एक डली और दो तब पिऊंगा।"

परी ने मिश्री की एक डली और दी तो वह उसे भी खा गया और फिर भी दवाई पीने को तैयार नहीं हुआ। वह बहाना बनाते हुए बोला, "मेरे पैरों के नीचे जो सिरहाना रखा है, पहले उसे हटाओ।"

परी ने सिरहाना भी हटा दिया पर पिनोकियो ने फिर भी दवा नहीं पी। तब परी ने तीन तालियां बजाईं और चार खरगोश अर्थी लिए बिस्तर के पास आ खड़े हुए। अब तो पिनोकियो घबराया। बोला, "यह अर्थी किसके लिए है? मैं अभी मरा तो नहीं हूं।"

खरगोश बोले, "अभी नहीं मरे तो थोड़ी देर में तो मरोगे ही। दवा नहीं पियोगे तो जियोगे कैसे?"

यह सुनते ही उसने दवा पी ली। परी ने चारों खरगोशों को वहां से लौट जाने को कहा।

दवा पीने से पिनोकियो चंगा हो गया और उठकर इधर-उधर घूमने लगा। परी उसे ठीक देखकर प्रसन्न हुई और उसे पास बिठाकर बातचीत करने लगी। वह बोली, "यह तो बताओ कि तुम जंगल में क्यों आए और ये दोनों लुटेरे तुम्हारे पीछे क्यों लगे

हुए थे?"

पिनोकियो ने उसे सारी कहानी सुना दी। परी ने कहानी सुनकर पूछा, "वे चार मोहरें तुमने कहां छिपा रखी हैं?"

"पता नहीं भाग-दौड़ और लड़ाई-झगड़े में कहां गिर गईं।" पिनोकियो ने झूठ-मूठ कह दिया। मोहरें तो इस समय भी उसकी जेब में थीं। परी के साथ झूठ बोलते ही उसकी लम्बी नाक और भी लम्बी हो गई। परी ने फिर पूछा, "तुम्हारी मोहरें गिरी कहां?"

"यहीं-कहीं जंगल में गिरी हैं।" उसने फिर झूठ कहा और उसकी नाक और लम्बी हो गई।

परी ने कहा, "जंगल में गिरी होंगी तो जरूर मिल जाएंगी। मैं अभी नौकरों को भेजकर खोज करवाती हूं।"

पिनोकियो ने तीसरी बार झूठ बोला, "अब याद आई। मोहरें मेरे मुंह में थीं। दवाई पीते समय वे पेट में चल गईं।" अब तो उसकी नाक और भी लम्बी हो गई। उसकी लम्बी होती नाक को देखकर

परी को हंसी आ गई। वह बोली, "तुम इस तरह बार-बार झूठ क्यों बोलते हो ? तुम जितना झूठ बोलते हो, उतनी ही तुम्हारी नाक बढ़ती जाती है।" यह सुनकर तो शर्म के मारे पिनोकियो का सिर झुक गया। उसने निश्चय किया कि अब वह कभी झूठ नहीं बोलेगा। परी ने उसकी बात पर विश्वास कर लिया और तीन बार ताली बजाई। तभी कई कठफोड़वे पिनोकियो की नाक पर आ बैठे और बढ़ी हुई नाक को काट-छील कर ठीक कर दिया। पिनोकियो परी पर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने परी को धन्यवाद दिया और उसकी प्रशंसा करने लगा।

परी बोली, "मुझे भी तुम बहुत अच्छे लगते हो। मैं तुम्हें अपना भाई बनाना चाहती हूं। ठीक है न ? मेरे पास रहोगे न ?"

"मैं तो यहां रहने को तैयार हूं किन्तु मेरे पापा भी तो हैं।"

"वह भी मैंने सोच लिया है। तुम्हारे पापा को भी खबर भेज दी गई है। वे शाम तक यहां आ जाएंगे।" यह सुनकर तो पिनोकियो मारे खुशी के नाचने लगा।

फिर बोला, "मैं कुछ दूर जाकर पापा का स्वागत करना चाहता हूं।"

"वैसे तो वे आ ही जाएंगे पर तुम्हारा मन चाहता है तो आगे जाकर रास्ते से लिवा लाओ।"

: ११ :

पिनोकियो पापा का स्वागत करने चल पड़ा। जब वह उस पेड़ के पास पहुंचा जहां उसे फांसी पर लटकाया गया था तो झाड़ी में से लोमड़ी और बिल्ली निकल आई। लोमड़ी झट पिनोकियो के पास चली आई और बोली, "भैया पिनोकियो ! तुम यहां कहां ?"

"हां, तुम यहां कहां ?" बिल्ली ने दोहराया।

पिनोकियो ने संक्षेप में अपनी रामकहानी सुनाते हुए कहा, "रास्ते में दो लुटेरे मिल गए। वे मुझसे मोहरें छीनना चाहते थे।"

"लुटेरे मोहरें छीनना चाहते थे ? ठग कहीं के !" लोमड़ी ने सहानुभूति दिखाते हुए कहा ।

"हां, ठग कहीं के !" बिल्ली ने दोहराया ।

"उन्होंने तो मुझे फांसी पर ही लटका दिया था ।" पिनोकियो बोला ।

"हे भगवान् ! बुरा ज़माना आ गया । मुसीबत तो हमारे जैसे भले लोगों की है ।" लोमड़ी बोली ।

"हां, मुसीबत तो हमारे जैसे भले लोगों की है ।" बिल्ली ने दोहराया ।

बातें करते पिनोकियो की नज़र जब बिल्ली के पंजों पर पड़ी तो एक पंजा था ही नहीं । पिनोकियो ने पूछा तो लोमड़ी ने बहाना बनाया कि इसने एक भूखे भेड़िये को दया करके खाने के लिए दे दिया है । पिनोकियो उसकी दानशीलता पर बड़ा प्रसन्न हुआ और बोला, "यदि सभी बिल्लियां तुम्हारी तरह हो जाएं तो चूहों की उमर सौ साल हो जाए ।"

"खैर, तुम यह बताओ कि जा कहां रहे हो ? उल्लुओं के देश में, जादू के मैदान में मोहरें बोने नहीं चलोगे क्या ?"

"एक मोहर तो खर्च हो गई । चार बची हैं । किन्तु इस समय तो मैं अपने पापा की अगवानी करने जा रहा हूं । फिर कभी देखा जाएगा ।"

"अभी नहीं, तो कभी नहीं । तुम्हें पता नहीं है, वह मैदान एक आदमी ने खरीद लिया है । कल से तो वह नया मालिक वहां किसीको जाने ही नहीं देगा । अभी चलो न ! पास ही तो है । चार मोहरों की चार हज़ार मोहरें हो जाएंगी । मज़ा आ जाएगा ।"

पिनोकियो उनके बहकावे में आकर फिर सब कुछ भूल गया । परी की बात भी भूल गया और लोमड़ी तथा बिल्ली के साथ जादू के मैदान को चल पड़ा । वे अंधेर नगरी को पार करके मैदान में पहुंचे तो लोमड़ी बोली, "यह रहा जादू का मैदान । अब ज़रा भी देर न करो । खोद-खादकर मोहरें बोकर, पानी से सींच दो और ऊपर से चुटकी-भर नमक बिखेर दो ।"

पिनोकियो ने लोमड़ी के बताए अनुसार सारा कार्य कर दिया तब लोमड़ी बोली, "चलो, अब चलें ।

तुम थोड़ी देर बाद आना और मोहरें तोड़ कर ले जाना।',

पिनोकियो मन में बड़ा प्रसन्न हुआ कि थोड़ी देर में वह धनवान बन जाएगा। उसने लोमड़ी और बिल्ली को फिर इनाम देने की बात कही।

लोमड़ी बोली, "हमें नहीं चाहिए इनाम-वनाम। तुम राजी तो हम राजी।"

: १२ :

जब लोमड़ी और बिल्ली अपनी राह गईं तो पिनोकियो भी अंधेर नगरी को लौट आया और दिन ढलने की प्रतीक्षा करने लगा। ताकि वह जादू के मैदान में जाए और मोहरें तोड़कर लाए। वह मन में तरह-तरह की बातें सोचता मैदान में पहुंचा तो कुछ नहीं था। न मोहरों का पेड़ और न पेड़ का बच्चा। पिनोकियो आश्चर्य में डूबा खड़ा था कि इतने में उसे किसीके खिल-खिलाकर हंसने की आवाज सुनाई दी। उसने इधर-उधर देखा तो पास

ही पेड़ पर बैठा एक तोता फिर हंस रहा था। उदास पिनोकियो तोते को हंसता देखकर बिगड़ उठा। बोला, "बिना बात के मूर्ख हंसते हैं?"

"मूर्ख तो वे होते हैं, जो अपने दिमाग से कुछ नहीं सोचते; और दूसरे की हर बात पर विश्वास कर लेते हैं। ऐसे ही एक मूर्ख पर मुझे हंसी आ रही है।" तोता बोला।

"तुम्हारा मतलब?" पिनोकियो ने कड़ककर पूछा।

"मतलब साफ है। तुम नम्बर एक मूर्ख हो। मूर्खानन्द! मोहरें क्या खेतों में उगती हैं? यह सब तुम्हारी मोहरें ठगने की चाल थी। तुम बो कर उधर गए और लोमड़ी तथा बिल्ली ने आकर तुम्हारी दबाई हुई मोहरें निकालीं और नौ-दो ग्यारह हो गईं। अब उन्हें कोई नहीं पकड़ सकता।

यह सुनकर पिनोकियो के पैरों के नीचे से मिट्टी सरक गई। पर उसे अब भी तोते की बात पर विश्वास नहीं हुआ। उसने जहां मोहरें बोई थीं, वहां उसने बहुत खोजा पर कुछ नहीं मिला।

पिनोकियो को मोहरें जाने और बुद्धू बनने का बड़ा दुःख था। वह लौटकर अन्धेर नगरी गया और कचहरी में लोमड़ी और बिल्ली के विरुद्ध चार सौ बीस, धोखाधड़ी और ठगी का मुकदमा कर दिया।

कचहरी में जज की कुर्सी पर बूढ़ा बन्दर बैठा हुआ था। उसने पिनोकियो के बयान सुने और गवाह उपस्थित करने को कहा। गवाह कोई था नहीं। जज ने घण्टी बजाकर दो सिपाही बुलाए। ये कुत्ते थे। जज ने उन्हें आज्ञा दी की इस कठपुतले के हथकड़ी पहनाकर जेल में बन्द कर दो। यह दूसरों पर झूठा मुकदमा करना चाहता है।

पिनोकियो कुछ सफाई देना चाहता था परन्तु कुत्ते उसे खींचकर ले गए।

पिनोकियो को छः महीने कैद का दण्ड मिला। पर सौभाग्य से अंधेर नगरी का राजा एक लड़ाई में जीत गया और इसी प्रसन्नता में उसने सारे कैदियों को छोड़ दिया।

: १३ :

जेल से छूटते ही वह वहां से सरपट दौड़ लगाता हुआ भाग चला। उसे डर था कि अन्धेर नगर में रहा तो फिर कोई विपत्ति न आ जाए। उसने फिर अपनी परी के पास जाने को निश्चय किया। उसे अब यह बात समझ में आ रही थी कि जब-जब उसने पापा और परी बहन का कहना नहीं माना तब-तब उसे विपत्ति झेलनी पड़ी। वह सोचने लगा कि घर से भागना एकदम बुरी बात है। मैंने बार-बार भूलें की हैं पर आगे नहीं करूंगा। वह इसी तरह सोचता-विचारता अपने ध्यान में चला जा रहा था। उसने देखा कि रास्ते में एक बड़ा भारी अजगर पड़ा हुआ है। अजगर लाल आंखों से उसे घूर रहा था और उसकी पूंछ से धुआं निकल रहा था। पिनोकियो सांप की बगल से निकलने का प्रयत्न करने लगा तो सांप

फुफकारने लगा। पिनोकियो डरकर भागा तो बुरी तरह गिर पड़ा। इसपर सांप को हंसी आ गई और वह हंसते-हंसते ही मर गया। अब पिनोकियो की जान में जान आई और वह उठकर भाग चला। दौड़ते-दौड़ते उसे भूख लग पड़ी थी। पास ही अंगूरों का बाग था। पके अंगूरों के गुच्छे लटक रहे थे। वह अंगूर तोड़ने के लिए बाग में घुसा ही था कि उसके पैर किसी चीज में फंस गए और वह गिर पड़ा। बाग के मालिक ने जंगली बिल्लियों को पकड़ने के लिए जाल फैला रखा था। पिनोकियो उसीमें फंस गया था। बिल्लियां बाग के मालिक की मुर्गियों को खा जाती थीं।

जाल में फंसा पिनोकियो रोने-चिल्लाने लगा। पर वहां तो कोई था ही नहीं। रात हो गई तो एक जुगनू जिगमग करता वहां आया। पिनोकियो ने उसे कहा, "भैया रे! किसी तरह मुझे इस जाल से छुड़ाओ।"

जुगनू बोला, "अरे, तुम इस जाल में कैसे फंस गए?"

"मैं भूखा था। अंगूर खाने आया था।" पिनोकियो ने कहा।

"यह अंगूर क्या तुम्हारे हैं?" जुगनू ने पूछा।

"नहीं, मेरे तो नहीं हैं। पर क्या करता! भूख जो लगी हुई थी।" पिनोकियो ने सफाई दी।

"वाह! यह भी कोई बात हुई। भूख लगे तो क्या चोरी का माल खाना चाहिए?" जुगनू ने डांट-कर कहा।

"ठीक कहते हो भाई! भूल मेरी ही है। आगे मैं कभी ऐसी भूल नहीं करूंगा। बस, आज किसी तरह छुड़ा दो।"

पिनोकियो गिड़गिड़ाया।

इतने में बाग का मालिक आ गया। वह तो यही देखने आया था कि कोई चोर बिल्ली जाल में फंसी है या नहीं। उसने बिल्ली की जगह कठपुतले को देखा तो बोला, "बच्चू, आज पता लगेगा, कि चोरी करने की क्या सजा होती है। आज मुर्गी-चोर को मुर्गा बनाकर छोड़ूंगा।"

पिनोकियो ने सफाई दी, "मैं तो भूखा था इस-

लिए अंगूर तोड़ने आ गया था! मैं चोर तो नहीं हूं।"

"अंगूर क्या तेरे बाप के थे जो तू इन्हें तोड़ने आया था? तू अंगूर चुरा सकता है तो मुर्गियां भी चुरा सकता है।" मालिक ने कहा और उसे जाल से छुड़ाकर धकेलता हुआ ले गया। घर ले-जाकर उसने पिनोकियो से कहा, "आज बहुत रात हो गई है। कल तुम्हें चोरी की सजा दी जाएगी। आज तुम रात-भर यहां पहरा दो।" यह कहकर उसने पिनोकियो के गले में पटा डालकर उसे कुत्ते की तरह जंजीर से बांध दिया।

: १४ :

पिनोकियो सर्दियों की ठंडी रात में भूखा-प्यासा रात-भर पहरा देता रहा। आधी रात को उसे कुछ आहट सुनाई दी। उसने इधर-उधर देखा तो आपस

में खुसर-फुसर करती जंगली बिल्लियां दिखाई दीं। इतने में एक बिल्ली उसके पास आई और बोली, "नमस्ते मैलाम्पो जी!"

पिनोकियो रुखाई से बोला, "मेरा नाम मैलाम्पो नहीं है। पिनोकियो है। मैं आज रात कुत्ते के बदले पहरा दे रहा हूं।"

"तो यह बात है! पहरेदार तो तुम भी भले लगते हो। चोरी के माल का हम जितना हिस्सा उस कुत्ते को देती थीं, उतना ही तुम्हें भी मिलेगा। तुम्हें कुछ करना भी नहीं पड़ेगा। बस, थोड़ी देर चुप रहना होगा। हम आठ मुर्गियां चुराएंगी और उनमें से एक तुम्हें मिलेगी। वह जो मैलाम्पो कुत्ता था न, उसके साथ भी हमारा यही समझौता था।"

पिनोकियो स्वीकृतसूचक सिर हिला दिया तो वे बिल्लियां मुर्गियों के बाड़े की ओर चल पड़ीं। बस, उनके बाड़े में घुसते ही पिनोकियो ने मालिक को जगा दिया। मालिक हड़बड़ाकर उठ बैठा और बन्दूक लेकर बाहर निकल आया। पिनोकियो ने उसे बताया कि बिल्लियां मुर्गियों के बाड़े में घुसी हैं।

मालिक एक थैला लेकर बाड़े में पहुंचा और बिल्लियों को पकड़कर थैले में बन्द कर दिया। वह पिनोकियो पर बड़ा प्रसन्न हुआ। पिनोकियो ने उसे बता दिया कि बिल्लियां उसे लालच देकर अपने साथ मिलाना चाहती थीं और तुम्हारा कुत्ता इन चोर बिल्लियों से मिला हुआ था। वह चोरी की मुर्गियों का हिस्सा लेता था और चुप पड़ा रहता था। पर पिनोकियो की इस बात पर मालिक ने विश्वास नहीं किया। उसे अपने चौकीदार कुत्ते पर पूरा भरोसा था।

पिनोकियो ने पहली ही रात को चोर बिल्लियां पकड़ा दी थीं, इसलिए मालिक ने उसके काम से प्रसन्न होकर उसे छोड़ दिया।

: १५ :

यहां से छूटते ही पिनोकियो जंगल की ओर भागा

और उस पेड़ के पास पहुंचा जहां उसे फांसी पर लटकाया गया था। वह इधर-उधर परी के महल को देखने लगा पर वह तो कहीं था ही नहीं। पता नहीं कहां छिप गया था। वह खोजता-खोजता उस जगह पहुंचा, जहां महल बना था। पर बड़े आश्चर्य की बात थी कि वहां महल नहीं था। वहां केवल एक छोटा चबूतरा था, जिसपर लिखा हुआ था: "छोटी परी अपने भाई पिनोकियो के अचानक कहीं चले जाने के दुःख से दुःखी होकर मर गई है।" यह पढ़ते ही पिनोकियो का सिर चकराया और वह बेहोश होकर गिर पड़ा। कुछ देर बाद होश आने पर वह फूट-फूटकर रोने लगा। इस दुनिया में अब उसका कोई नहीं था। उसे अपने पापा का कुछ पता नहीं था और परी बहन मर गई थी। अब वह कहां जाए और क्या करे, उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

इसी समय एक कबूतर ने उससे पूछा, "अरे लड़के! तुम यहां बैठे क्या कर रहे हो?"

पिनोकियो ने आंसू-भरी आंखों से कबूतर की ओर देखते हुए कहा, "तुम्हें दिखाई नहीं देता कि

मैं रो रहा हूं।"

कबूतर ने कुछ पास आकर पूछा, "क्या तुम्हीं पिनोकियो नाम के कठपुतले हो ?"

"नहीं तो और क्या !" पिनोकियो ने आंखें पोंछते हुए कहा।

"क्या तुम जेपेत्तो को जानते हो ?" कबूतर ने अपनी लाल-गोल आंखें मटकाते हुए पूछा।

"नहीं तो और क्या ! वे ही तो मेरे पापा हैं। भला ऐसा कौन लड़का है जो अपने पापा को नहीं जानता हो ! अच्छा, तुम यह सब क्यों पूछ रहे हो ? क्या तुम बता सकते हो कि पापा इस समय कहां हैं ?"

कबूतर ने कहा, "कुछ दिन पहले मैंने तुम्हारे पापा को देखा था। वह एक छोटी डोंगी बना रहा था। बेचारा जेपेत्तो पिछले तीन महीनों से तुम्हें दुनिया जहान में खोजता फिर रहा है। फिर भी उसे कहीं तुम्हारा पता नहीं लगा। अब वह समुद्र-पार के देशों में तुम्हें खोजना चाहता है। उसके लिए डोंगी बना रहा था।"

"समुद्र तो यहां से बहुत दूर होगा ?" पिनोकियो ने पूछा।

"यही कोई छः-सात सौ मील होगा। तुम जेपेत्तो के पास जाना चाहो तो बात करो। मैं तुम्हें अपनी पीठ पर बिठाकर ले चलूंगा। उड़ने में तो बाज भी मेरी बराबरी नहीं कर सकता।"

"तुम्हारी बड़ी कृपा होगी। तुम्हारे जैसे लोटन कबूतरों के कारण ही यह दुनिया चल रही है। भगवान् तुम्हारा भला करे।" पिनोकियो कबूतर की पीठ पर बैठ गया तो कबूतर ने उड़ान भरी। उड़ते-उड़ते शाम हो गई तो कबूतर बोला, "बड़ी प्यास लगी है। पानी पी लूं।"

"मेरा भूख के मारे बुरा हाल है।" पिनोकियो ने कहा।

: १६ :

दोनों धरती पर उतर पड़े और योंही कुछ खा-पीकर फिर उड़ चले और रात-भर उड़ते रहे। पौ फटते-फटते वे समुद्र के किनारे आ पहुंचे। किनारे पर लोगों की भीड़ थी और बड़ा शोर हो रहा था। पिनोकियो ने एक बुढ़िया को नमस्ते करने के बाद पूछा, "मां जी, क्या बात है? यह भीड़ किसलिए इकट्ठी हुई है और उधर क्या देख रही है?"

"अरे बेटा! क्या पूछते हो! आजकल के लड़के भी कैसे-कैसे मूर्ख हैं। एक गरीब आदमी का लड़का घर से भागकर न मालूम कहां चला गया है। बेचारा बाप डोंगी में बैठकर समुद्र-पार के देशों में उसे खोजने चला है। और उसकी छोटी डोंगी तूफान में फंस गई है।" बुढ़िया ने उफनती लहरों पर डोलती डोंगी की ओर उंगली करते हुए, पिनोकियो से

कहा।

पिनोकियो ने उधर देखा तो झट समझ गया कि यह तो उसी के पापा हैं, "पापा। मैं आ गया हूं पापा। मैं आ रहा हूं।" यों चिल्लाता हुआ वह एक चट्टान पर चढ़ गया और हाथ उठा-उठाकर अपने पापा को पुकारने लगा। जेपेत्तो ने आवाज से पिनोकियो को पहचान लिया और वह नाव को किनारे की ओर लाने का प्रयत्न करने लगी। पर एक जोरदार लहर ने डोंगी को परे धकेल दिया और वह आंखों से ओझल हो गई। किनारे पर खड़े लोगों ने समझ लिया कि डोंगी डूब चुकी है। वे आहें भरकर बेचारे जेपेत्तो के लिए दुःख मनाने लगा।

पर पिनोकियो अपने पापा को बचाने के लिए समुद्र में कूद चुका था। वह बड़ी तेजी से तैर रहा था और देखते-देखते लोगों की आंखों से ओझल हो गया। किनारे खड़े लोगों को लगा कि बाप तो डूबा ही था, बेटा भी गया। वे दोनों के लिए दुःख मनाते और भगवान् से प्रार्थना करते अपने-अपने घरों को लौट गए।

पिनोकियो लगातार तैरता रहा और दूसरे दिन एक द्वीप के पास जा पहुंचा पर तूफानी लहरें उसे किनारे पर लगने ही नहीं देती थीं। अन्त में एक लहर ने उसे जोर से ऊपर उछाल दिया और वह सूखे में जा गिरा। गिरने से उसे काफी गुम चोटें आईं और सारा शरीर दुखने लगा। वह रेत में पड़ा-पड़ा थकान उतारता रहा और समुद्र की ओर देखता रहा कि कहीं उसके पापा की डोंगी दिखाई दे जाए। पर उसे कोई नाव दिखाई नहीं दी। यह द्वीप भी सुनसान-सा था। इसके अतिरिक्त उसे भूख भी लगी हुई थी। उसके पास के पानी में एक बड़ी सुन्दर मछली तैर रही थी। पिनोकियो ने उससे पूछा, "पानी की रानी मछली ? एक बात तो बताओ ?"

मछली एकदम किनारे पर आ गई और बोली, "एक नहीं, दो पूछो। बात बताने में कुछ खर्च थोड़े ही होता है।"

"क्या इस टापू पर ऐसे भले लोगों का कोई गांव है, जहां मुझे पेटभर खाना मिल जाए ?" पिनोकियो ने नम्रता से पूछा।

मछली रानी बोली, "देखो, उस ओर अपनी लम्बी नाक की सीध में चले जाओ तो गांव में तुम्हें खाना मिल जाएगा।"

"मछली रानी ! अब, दूसरी बात यह बताओ कि तुमने एक छोटी डोंगी में सवार मेरे पापा को तो कहीं नहीं देखा ?" पिनोकियो ने दूसरी बात पूछी।

"मुझे क्या पता तुम्हारे पापा कौन हैं और कैसे हैं ?" मछली रानी ने कहा।

"मेरे पापा बहुत ही अच्छे हैं और मैं बहुत बुरा हूं। मेरे ही कारण वे तूफान में फंस गए हैं।" पिनोकियो ने बताया।

मछली बोली, "कौन जाने तुम्हारे पापा की डोंगी डूब गई है या किसी मछली ने निगल ली है ! समुद्र में इतनी बड़ी मछलियां होती हैं कि कुछ मत पूछो।"

: १७ :

यह सुनकर पिनोकियो को बड़ी निराशा हुई और वह उदास-सा गांव की ओर चल पड़ा। भूख से बेहाल वह गांव में जा पहुंचा तो वहां सभी आदमी अपने-अपने काम में लगे हुए थे। एक भी ठाली इधर-उधर नहीं घूम रहा था। किसी को बात करने तक की फुर्सत नहीं। भीख मांगने को पिनोकियो का मन नहीं करता था और भूखे पेट काम करने की भी हिम्मत नहीं थी। इतने में हथठेले को खींचता एक आदमी वहां से निकला। वह देखने से भला मालूम देता था। पिनोकियो ने हिम्मत करके उससे दो पैसे मांगे। वह आदमी बोला, "दो पैसे नहीं, मैं तुम्हें दो आने दूंगा पर ज़रा मेरे साथ गाड़ी खींचने में सहायता करो।"

पिनोकियो को उसकी बात बुरी लगी। बोला,

"गाड़ी खींचना आदमी का नहीं, गधों और बैलों का काम है। यह घटिया काम न मैंने कभी किया और न करूंगा।"

हथठेले वाला भी उसकी ओर लापरवाही से देखकर आगे बढ़ गया। फिर तो जो कोई भी सामने पड़ता पिनोकियो उसी से हाथ फैलाकर भीख मांगता पर सभी उसे यह कहते हुए आगे बढ़ जाते कि क्या तुम्हें भीख मांगते शर्म नहीं आती! कमाकर क्यों नहीं खाते।

एक स्त्री सिर पर घड़ा और हाथ में बाल्टी लिए सामने से आ रही थी। पिनोकियो ने उससे पानी मांगा तो वह उसे पानी पिलाने लगी। पानी पीकर पिनोकियो ने उसे सुनाते हुए कहा, "कहीं से एक रोटी मिल जाती तो…"

उस स्त्री ने कहा, "तुम मेरी यह बाल्टी घर तक ले चलो तो मैं तुम्हेंपेट-भर खाना खिलाऊंगी।"

पिनोकियो ने अनमने ढंग से बाल्टी उठाई और चल पड़ा। घर पहुंचकर स्त्री ने उसे खाना खिलाया। भूख से व्याकुल वह थाली पर टूट पड़ा

और दोनों हाथों से खाने लगा। पेट भर जाने पर जब उसने थाली से नजर उठाकर उस स्त्री की ओर देखा तो उसे लगा कि पहले भी कहीं इसे देखा जरूर है। थोड़ी देर वह याद करता रहा कि इसे पहले कहां देखा है, फिर वह उसके पैरों पर गिर पड़ा और 'मेरी प्यारी बहन' कहकर रोने-पछताने लगा।

वह स्त्री भी उसे रोता देखकर रोने लगी। यह वही जंगल की परी थी जो अब बड़ी हो चुकी थी। पिनोकियो को उसके बढ़ने का बड़ा आश्चर्य था। उसने पूछ ही लिया, "तुम इतनी बड़ी कैसे हो गईं? मैं तो उतने का उतना ही हूं।"

"कठपुतले जो हो। कठपुतले भी कहीं बढ़ते हैं!" स्त्री ने कहा।

"बहन। तो क्या मैं उमर-भर ऐसा ही कठपुतला रहूंगा! न बहन। मैं ऐसा नहीं रहना चाहता! मैं भी बड़ा और भला बनना चाहता हूं।" पिनोकियो ने रुआंसा-सा होकर कहा।

"हां, बन तो सकते हो, पर यह काम जरा

कठिन है। तुम कर नहीं सकोगे। इसके लिए बड़ों का कहना मानना पड़ता है। पढ़ना-लिखना पड़ता है और सच बोलना पड़ता है। सबसे बड़ी बात यह है कि मेहनत करनी पड़ती है।" स्त्री ने कहा।

पिनोकियो ने उत्तर दिया, "पढ़ने में तो मेरा मन रत्ती-भर नहीं लगता। पढ़ने बैठता हूं तो उबासियां और नींद आने लगती है। पर यदि पढ़ने से अच्छा आदमी बन सकता हूं तो जरूर पढूंगा।"

: १८ :

दूसरे दिन से पिनोकियो ठीक समय पर कंधे से बस्ता लटकाए पढ़ने जाने लगा। स्कूल के लड़के तो तुम जानते ही हो कि खूब शरारती होते हैं। कठपुतले को देखकर लड़के उसे छेड़ने लगे। कोई तो उसकी लम्बी नाक पकड़कर चिढ़ाता तो कोई उसके चलने के ढंग की नकल लगाता। एक-दो दिन तो

वह सब सहता रहा पर इससे शरारती लड़कों ने उसे डरपोक और दब्बू समझ लिया और ज्यादा तंग करने लगे। दुखी होकर पिनोकियो ने एक लड़के की बगल में जोर से कोहनी मारी और दूसरे के टखने में अपने लकड़ी के पैर की ठोकर। दोनों लड़कों की चीख निकल गई। लड़कों ने उससे छेड़खानी करना बन्द कर दी और मित्र बन गए। मास्टर जी भी पिनोकियो का बहुत ध्यान रखते थे। स्कूल में कुछ अयोग्य और शरारती लड़के भी थे। वे न स्वयं पढ़ते और न दूसरों को पढ़ने देते। मास्टर जी अलग से पिनोकियो को समझा दिया था कि इन लड़कों के साथ न खेलना और न अधिक बातचीत करना। पर पिनोकियो ने मास्टर जी की इस बात का ध्यान भी नहीं दिया।

एक स्कूल के रास्ते में इन शरारती लड़कों की टोली ने पिनोकियो से कहा, "चलो, आज एक अनोखी चीज देखेंगे। पता चला है कि समुद्र में आज एक बड़ी विशाल मछली निकली है। देखने वालों की भीड़ लगी हुई है। चलो, हम भी चलें।" पिनोकियो ने

मना कर दिया। बोला, "नहीं भई, मैं नहीं जा सकता। मास्टर जी ने मना किया हुआ है।"

"मास्टर जी को तो पता भी नहीं लगने देंगे। हम घंटे-भर में लौट आएंगे और कोई बहाना बना देंगे। मास्टर जी की सब बातें मानने लगे तो कैसे गुजारा होगा।' एक आवारा लड़के ने कहा।

पिनोकियो उनके बहकावे में आ गया। सभी समुद्र के किनारे पहुंचे पर वहां न तो बड़ी मछली थी और न छोटी। पिनोकियो ने पूछा, "मछली कहां है?"

लड़के बोले "कहीं आसपास ही होगी। चाय-पानी पीने गई होगी।"

अब पिनोकियो की समझ में आया कि ये तो उसे झूठ-मूठ बोलकर ले आए हैं। वे पिनोकियो का मजाक उड़ाने लगे। वे कई थे और पिनोकियो अकेला मजाक से बात मारपीट पर आ पहुंची। एक लड़के ने अपनी गणित की मोटी किताब पिनोकियो पर दे मारी पिनोकियो पैंतरा बदलकर बच गया और उसने वही किताब उठाकर एक लड़के के सिर पर दे

मारी। उस लड़के का सिर चकरा गया और मर गया। तुम जानो, गणित की पुस्तकें भारी और ठोस होती हैं। गणित की चोट खाकर बचना कठिन है।

: १६ :

एक शैतान लड़के के मरते ही बाकी भाग खड़े हुए। अकेला पिनोकियो रह गया। वह पछता रहा था कि क्यों तो वह इन बुरे लड़कों के साथ आया और क्यों उसने लड़के को किताब दे मारी। वह पानी के छींटे देकर बेहोश लड़के को होश में लाने का प्रयत्न करने लगा। तभी दो सिपाही वहां आ पहुंचे। उन्होंने कड़ककर पूछा, "यह लड़का यहां कैसे पड़ा है ?"

"यह मेरा स्कूल का साथी है। इसके सिर में चोट लग गई है। मैं इसकी सहायता कर रहा हूं।" पिनोकियो ने कहा।

सिपाहियों ने समझा कि पिनोकियो ने ही इसे चोट पहुंचाई। वे उसे थाने ले चले। थोड़ी ही दूर गए थे कि हवा से पिनोकियो की टोपी उड़ गई। उसने सिपाहियों से कहा, "हवलदार साहब ! जरा ठहरिए, मैं अपनी टोपी उठा लाऊं !"

"दौड़कर उठा लाओ !" सिपाही ने कहा और पिनोकियो टोपी उठाकर सिपाहियों के चंगुल से भाग निकला। मोटे सुस्त सिपाही भागने में पिनोकियो की बराबरी कहां कर सकते थे। उन्होंने अपना एक कुत्ता उसे पकड़ने के लिए छोड़ दिया। आगे पिनोकियो और पीछे कुत्ता। पिनोकियो समुद्र के किनारे जा पहुंचा और पानी में कूद गया। कुत्ता भी उसका पीछा करता हुआ पानी में कूद पड़ा। कुत्ता पानी में गोते खाने लगा। उसने पिनोकियो से सहायता मांगी। पिनोकियो को उसपर दया आई और उसने कुत्ते को डूबने से बचा लिया। कुत्ता पिनोकियो का धन्यवाद करता हुआ लौट गया और जाते-जाते कहता गया, अगर कभी जरूरत पड़े तो मुझे याद करना।

पिनोकियो वहां से मछेरों के गांव में पहुंचा तो पता लगा कि कल जो लड़का बेहोश होकर गिर पड़ा था, वह ठीक है और अपने घर लौट गया है। अब वह अपनी बहन परी के घर की ओर चला। रात हो गई थी और पानी बरसने लगा था। आंधी भी चल रही थी। लज्जा से सकुचाते हुए पिनोकियो ने दरवाजा थपथपाया। चौथी मंजिल से एक घोंघे ने झांककर देखा। पिनोकियो ने दरवाजा खोलने को कहा तो उसने आवाज पहचानते हुए कहा, "ठहरो, अभी आता हूं।" पर एक घंटा बीत जाने पर भी किसी ने दरवाजा नहीं खोला। ठंड और भूख से पिनोकियो का बुरा हाल था। पिनोकियो ने फिर दरवाजा खटखटाया तो तीसरी मंजिल की खिड़की से झांककर घोंघे ने कहा, "लड़के! शोर क्यों मचाते हो? आ तो रहा हूं।"

और दो घंटे बीत गए पर दरवाजा नहीं खुला। पिनोकियो को क्रोध आ गया। उसने दरवाजे पर जोर की लात मारी। पर यह क्या, उसकी लात लकड़ी में धंस गई। पिनोकियो ने बड़ा यत्न किया

पर टांग नहीं छूटी। वह एक टांग पर ही सवेरे तक खड़ा रहा। सवेरा भी हुआ और घोंघे ने दरवाजा भी खोला। वह पिनोकियो को एक टांग पर खड़ा देखकर हंस पड़ा। पिनोकियो पहले से ही जला-भुना खड़ा था। घोंघे को हंसता देखकर तो उसे और भी बुरा लगा पर उसने गुस्सा पीकर कहा, "घोंघे भाई। यह मेरी टांग तो किसी तरह छुड़ाओ। तुमसे न छूटे तो परी बहन को बुला लाओ।"

घोंघा बोला, "बढ़ई को बुलाऊं। वह या तो दरवाजे को काट देगा या तुम्हारी टांग को।"

"मुझे कुछ खाने को तो दो।" पिनोकियो ने कहा।

"अच्छा, ठहरो जाता हूं।" यह कहकर घोंघा अन्दर चला गया और कोई चार घंटे बाद थोड़ा-सा नाश्ता लेकर लौटा। भूख से व्याकुल पिनोकियो जब नाश्ता करने लगा तो सभी चीजें मिट्टी की बनी हुई थीं। ये देखने-भर के लिए थे, खाने के लिए नहीं। पिनोकियो गिर पड़ा और अचेत हो गया। जब उसे होश आई तो वह बिस्तर पर लेटा हुआ था और परी बहन

सिरहाने बैठी हुई थी। वह बोली, "तुम बार-बार भूल करते हो और फिर कहते हो कि अब भूल नहीं करूंगा। अब की अगर तुमने ऐसा ही किया तो ठीक नहीं होगा।"

अब पिनोकियो प्रतिदिन स्कूल जाता और मेहनत से पढ़ता। वह भला लड़का जो बनना चाहता है।

परी ने उसे कहा, "कल से तुम कठपुतले नहीं रहोगे। तुम अच्छे लड़के बन जाओगे।"

यह सुनकर तो पिनोकियो प्रसन्नता से नाचने लगा। उसने सोचा, "मैं अपने साथियों को जोरदार पार्टी दूंगा।

: २० :

पिनोकियो परी बहन से पूछकर अपने मित्र को निमन्त्रण देने निकला। उसका एक गहरा मित्र था

रोमियो। उसे सब सींकिया पहलवान कहकर चिढ़ाते थे। पिनोकियो कई बार उसके घर पर निमंत्रण देने गया पर वह नहीं मिला। बहुत खोजने पर वह खेत में एक किसान की झोंपड़ी के पीछे छिपा हुआ मिला। पिनोकियो के यह पूछने पर कि यहां क्यों छिपे हो, रोमियो ने कहा, "सूरज छिपने की प्रतीक्षा कर रहा हूं। मैं यहां से भागकर एक दूसरे देश में जाना चाहता हूं। वहां बड़े मौज-मजे हैं। उस देश का नाम है मूर्ख नगरी।" पिनोकियो ने उसे पार्टी में आने का निमत्रण दिया और बताया कि वह अब कठपुतले से लड़का बन जाएगा। पर सींकिया पहलवान को एक साथी की जरूरत थी। वह पिनोकियो से बोला, "तुम आदमी बनने के चक्कर में पड़कर घनचक्कर बन जाओगे। चलो मेरे साथ। वहां न स्कूल और न मास्टर, न किताबें और न कापियां। बस खाओ और खेलो। यहां से ही कितने लड़के आ रहे हैं।"

पिनोकियो भी साथ जाने को तैयार हो गया। एक गाड़ी वहां आई। उसमें बहुत-से लड़के बैठे थे।

वे सब मूर्ख नगरी को जा रहे थे। इस गाड़ी को बारह गधे खींच रहे थे। सीकिया पहलवान ने गाड़ी को रोकने के लिए हाथ खड़ा किया। गाड़ी में जगह कम थी फिर वे जैसे-तैसे उसमें चढ़ गए। पर जब पिनोकियो एक गधे पर चढ़ने लगा तो गधे ने उसे जोर की लात मार दी। यह देख सभी लड़के खिलखिलाकर हंस पड़े। कोचवान ने उस गधे के कान मरोड़े। पिनोकियो उठकर उसी गधे की पीठ पर सवार हो गया। इसपर बाकी लड़के तालियां बजाकर हंसने लगे।

गाड़ी मूर्ख नगरी जा पहुंची। यहां केवल आवारा और हर समय खेलने के शौकीन लड़के ही रहते थे। दिन-भर शोर होता रहता। कोई किसीको रोकने-टोकने वाला नहीं था। यहां कोई नियम-कानून नहीं था। कोई अनुशासन नहीं। गाड़ी से उतरते ही सब लड़के ऊधम मचाने लगे और खेल-कूद में मस्त हो गए कोई लट्टू घुमाने लगा तो कोई कंचे खेलने। कोई भंगड़ा नाच करने लगा तो कोई ट्विस्ट। कोई पंतग उड़ाने लगा तो कोई सीटी बजाने।

: २१ :

दिन-रात खेलते-कूदते पता नहीं लगता था कि कब सवेरा हुआ और कब शाम। इसी तरह कई महीने बीत गए। एक दिन जब पिनोकियो सोकर उठा और सिर के बाल पीछे हटाने लगा तो देखा कि उसके कान गधे के कानों की तरह लम्बे हो गए हैं। उसे बड़ी शर्म आई। उसने एक बड़ी-सी टोपी के नीचे कान छिपा लिए और सींकिया पहलवान से मिलने चला। जब वह उसके पास पहुंचा तो उसकी हालत भी खराब थी। उसके घुटने में चोट लगी हुई थी। दोनों मित्र एक-दूसरे के गले में बांहें डालकर रो रहे थे। उनकी आवाज भी बदलकर गधों जैसी हो गई थी। सींकिया पहलवान के कान भी गधे जैसे हो चुके थे। वे एक-दूसरे की हालत पर तरस खाकर रेंक रहे थे कि किसीने दरवाजा खटखटाया। वे शर्म के मारे दरवाजा नहीं खोल

रहे थे।

यह वही कोचवान था जो उन्हें गाड़ी में बिठाकर लाया था। वह दरवाजा तोड़कर भीतर आया और दोनों की पीठ पर हाथ फेरकर प्यार करने लगा। फिर बोला, "मैं तुम्हारा रेंकना सुनकर आया हूं।"

वे दोनों पूरे गधे बन चुके थे। वह कोचवान उन्हें बेचने के लिए बाजार ले गया। सींकिया पहलवान को तो एक किसान खरीदकर ले गया और पिनोकियो को एक सरकस वाला। सच तो यह है कि यह कोचवान अपने मतलब के लिए लड़कों को बहकाकर ले आता था। लड़के जब खेल-खेलकर पूरे गधे बन जाते थे तो उन्हें बेचकर पैसे कमाता था।

सरकस का मालिक पिनोकियो को तरह-तरह के तमाशे सिखाता और शाम को घास या भूसा खाने को दे देता। पिनोकियो ने एक दिन घास चरने से मना किया तो उसे बुरी तरह पीटा गया। मरता क्या न करता। वह घास खाकर ही पेट भरने लगा। अब वह पछताता था कि कहां आ फंसा। किन्तु अब क्या हो सकता था।

: २२ :

सरकस के मालिक ने सरकस दिखाना चालू कर दिया और बड़े-बड़े इश्तहार लगाए। इश्तहार में मोटे-मोटे अक्षरों में पिनोकियो नाम के गधे के अनोखे करतब देखने के लिए लिखा था।

सरकस का पंडाल देखनेवालों से खचाखच भर गया। बढ़िया ज़ीन से सजा गधा पिनोकियो अपने करतब दिखाने के लिए लाया गया। रिंग मास्टर ने पिनोकियो को कहा, "सब तमाशा देखनेवालों को पैर जोड़कर नमस्ते करो।"

पिनोकियो ने अगले पैर जोड़कर सिर झुका दिया। फिर उसे गोल चक्कर में दौड़ लगाने को कहा। इसके बाद रिंग मास्टर ने हवा में पिस्तौल छोड़कर धमाका किया। धमाका होते ही पिनोकियो यों सड़क पर गिर पड़ा जैसे उसे गोली लगी हो। फिर वह

थोड़ी देर बाद उठ खड़ा हुआ। दर्शकों की तालियों से पंडाल गूंज उठा।

पिनोकियो तालियां बजाते दर्शकों की ओर देख रहा था कि उसकी नजर अपनी बहन परी पर पड़ी। वह मारे प्रसन्नता के अपनी बहन को रेंक-रेंक कर पुकारने लगा। लोगों ने समझा कि गधा तालियां बजाने से प्रसन्न हो रहा है। वे और जोर से तालियां बजाने लगे। पंडाल में बड़ा शोर मचा। रिंग मास्टर ने पिनोकियो की नाक पर चाबुक दे मारा। चाबुक की मार से गधे को जीभ बाहर निकल आई। अब उसे दर्शकों के बीच बैठी अपनी बहन भी कहीं नहीं दिखाई दे रही थी।

अब रिंग मास्टर ने उसे लोहे के एक चक्कर में से निकलने को कहा। पिनोकियो कूदकर निकलने लगा तो पैर फंस गया और गिर पड़ा। वह लंगड़ा हो गया। लंगड़ा गधा सरकस के काम का तो रहा नहीं। मालिक उसे बेचने बाजार ले गया। भला लंगड़े गधे को कोई क्यों खरीदता पर एक ढोल बजाने वाला खरीदने के लिए तैयार हो गया। उसका ढोल

 S.B.–13

फट चला था और वह गधे का चमड़ा उतारकर नया ढोल मढ़वाना चाहता था। यह जानकर पिनोकियो का बुरा हाल हुआ। वह रेंक-रेंककर अपने प्राणों की भीख मांगने लगा पर उसकी बोली कौन समझता! ढोली उसे पीटता-पीटता समुद्र की ओर ले चला और वहां पहुंचकर उसने गधे के गले में एक भारी पत्थर बांध दिया और लम्बी रस्सी से बांधकर पानी में डुबो दिया और उसके मरने की प्रतीक्षा करने लगा।

लगभग एक-डेढ़ घंटा गधा पानी में डूबा रहा तो ढोली ने समझा कि मर गया होगा। वह रस्सी खींच-कर उसे निकालने लगा। पर वह देखकर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि गधे के बदले वहां एक जीवित कठपुतला बंधा हुआ है। उसने कठपुतले से पूछा, "अरे तू कौन है? मैंने तो गधे को बांधकर डुबोया था। वह कहां गया?"

"मैं ही वह गधा हूं।" पिनोकियो ने कहा।

ढोली बोला, "मैं तुम्हें यों ही नहीं छोड़ दूंगा। पैसे खर्चे हैं मैंने।"

पिनोकियो समझाने लगा, "पहले मैं कठपुतला था। मैंने न पापा की बात मानी और न परी बहन की। मैं पढ़ना-लिखना छोड़कर मूर्ख नगरी में चला गया था और दिन-रात खेलते रहने से गधा बन गया। अब तुमने मुझे पानी में डुबोया तो मछलियों ने ऊपर का मांस खा डाला और फिर नीचे का कठपुतला बच रहा। अब तुम्हीं बताओ, इसमें मेरा क्या दोष !"

ढोली ने कहा, "मुझे तो अपने पैसे पूरे करने हैं। मैं तुम्हें लकड़ी के भाव बेच डालूंगा।"

"अरे ढोली मियां, तुम समझते क्या हो। तुम मुझे लकड़ी के भाव बेचोगे ?" यह कहते हुए वह सिरपर पांवरखकर भाग खड़ा हुआ। ढोली भी पीछे दौड़ा। पिनोकियो ने समुद्र में छलांग लगा दी। ढोली देखता रह गया।

: २३ :

गहरे पानी में पहुंचने पर एक बड़ी भारी मछली उसे खाने दौड़ी। वह साबुत पिनोकियो को ही निगल गई। मछली के पेट में पहुंचकर पिनोकियो को वहां घना अंधेरा दिखाई दिया। मछली जब सांसलेती थी तो पेट में आंधी चलने लगती थी। पिनोकियो वहां घबरा गया और 'बचाओ, बचाओ' का शोर मचाने लगा।

बड़ी मछली के पेट में से एक छोटी मछली बोली, "यहां तुम्हें बचाने वाला कौन है ? तुम किस जात की मछली हो ?"

"मैं मछली नहीं कठपुतला हूं।" पिनोकियो ने कहा।

"खैर, तुम चाहे कोई भी हो, यहां से बचकर नहीं जा सकते।" मछली बोली।

"यह भी कोई मौत है। मैं इस तरह नहीं मरना चाहता" पिनोकियो ने कहा और वहां से दीख रही किसी चमकती चीज की ओर चल पड़ा। उसके पास जाकर देखा कि वहां एक मेज पर मोमबत्ती जल रही थी और कुर्सी पर एक बूढ़ा आदमी बैठा हुआ था। यह बूढ़ जेपेत्तो था। पिनोकियो ने उसे पहचान लिया और गले से लिपट गया। दोनों एक-दूसरे को अपनी-आप बीती सुनाई। जेपेत्तो ने बताया कि उसे मछली ने निगल लिया था और उसी मछली ने एक जहाज भी निगल लिया था। उस जहाज में खाने-पीने का चीजें थीं जिन्हें खाकर मैं आजतक गुजारा कर रहा हूं।

पिनोकियो ने कहा, "पापा, चलो हम इसके पेट से बाहर निकल चलें। मैं तो पानी में डूबता ही नहीं हूं। तुम्हें अपनी पीठपर बिठाकर किनारे पहुंचा दूंगा।"

वे दोनों मछली के मुंह की ओर चले। मछली मुंह खोलकर सोई हुई थी। दोनों चुपचाप उसकी जीभ पर पैर रखते हुए बाहर निकल गए।

पिनोकियो ने जेपेत्तो को पीठ पर बैठाया और तैरता हुआ किनारे पर आ पहुंचा।

: २४ :

दोनों घर की ओर चले। उन्हें रास्ते में दो भिखारिनें मिलीं। वही लोमड़ी और बिल्लो। लोमड़ी अब सचमुच लंगड़ी हो गई थी और बिल्ली अंधी। उनको रोटियों के लाले पड़े हुए थे। पिनोकियो को देखकर लोमड़ी बोली, "भैया रे! अंधी और लंगड़ी को कुछ देते जाओ। भगवान् तुम्हारा भला करे।"

"हां, कुछ देते जाओ।" बिल्ली ने दोहराया।

पिनोकियो उन्हें पहचान गया था। उसने उनकी बात अनसुनी की और आगे बढ़ा। आगे एक झोंपड़ी दिखाई दी। दोनों वहां पहुंचे और खाना मांगने लगे। भीतर वही झींगर बैठा हुआ था। झींगुर ने भी उसे

पहचान लिया। बोला, "तुम्हीं ने तो मुझे हथौड़ी से मारा था। पर मैं तुम्हारे जैसा नहीं हूं। तुम यहां रह सकते हो। यह झोंपड़ी मुझे तुम्हारी परी बहन ने दी है।"

"कहां है मेरी परी बहन ? मैं उससे मिलना चाहता हूं।" पर झींगुर ने कुछ नहीं बताया। जेपेत्तो की तबीयत कुछ खराब थी। उसे लिटाकर वह उसके लिए दूध लाने निकला। एक माली का खेत सींचकर उसके बदले एक गिलास दूध लाया। माली के पास एक गधा था जो मर रहा था। पिनोकियो उसे देखते ही पहचान गया कि यह तो वही सींकिया पहलवान मेरा लंगोटिया यार है। बेचारा मरने ही वाला था। अपने पापा को पिनोकियो ने टहल-सेवा करके ठीक कर लिया। फिर उसने टोकरियां बनाना सीखा और उन्हें बेचकर अपना और पापा का पेट पालने लगा। फिर उसने कुछ पैसे जमा किए और बोला, "पापा ! मैं अपने लिए नये कपड़े और जूते खरीद लाता हूं। उन्हें पहनकर मैं एकदम नवाब साहब बन जाऊंगा।" रास्ते में उसे वही घोंघा मिला जो

परी के यहां था। पिनोकियो ने उससे परी का पता पूछा तो उसने बताया कि वह तो आजकल बीमार है। यह सुनकर पिनोकियो को बड़ा दुःख हुआ। उसने अपनी जेब से रुपये निकालकर घोंघे को दिए और कहा कि इनसे उसके लिए दवाई और खुराक खरीदकर ले जाओ।" वह स्वयं भी परी के पास जाना चाहता था पर बीमार पापा को छोड़कर कैसे जाता।

उस दिन पिनोकियो ने और दिनों से दुगुना काम किया। वह रात को देर से सोया। उसने सपना देखा कि परी उसके पास आई और बोली, "मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूं। अब तुम सचमुच अच्छे लड़के बन गए हो।" पिनोकियो की नींद खुल गई। उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि अब वह लड़का बन गया। पहले जैसा कठपुतला नहीं। यही नहीं, वह झोंपड़ी मकान में बदल चुकी थी और चटाई की जगह बिस्तर बिछा था। वह उठ खड़ा हुआ। पास ही नये-नये कपड़े रखे थे। वह उसने पहने। जूते पहने और टोपी लगाई। जेब में एक बटुए में तीस सोने

की मोहरें उसे मिलीं। यह परी की दवाई के लिए दिए पैसों के पुण्य से मिली थीं। सज-संवरकर पिनोकियो शीशे के सामने जा खड़ा हुआ। वह एकदम बदल चुका था। अब दौड़ता हुआ पापा को देखने चला। दूसरे कमरे में जेपेत्तो मजे में बैठा हुआ था। उसने अपना खिलौने बनाने का पुराना काम शुरू कर दिया। वह अपने पापा के गले से लिपट गया और पूछने लगा, "पापा! यह सब कुछ कैसे बदल गया, तुम भी बदल गए।"

"यह सब तुम्हारे अच्छा लड़का बन जाने से बदला है।" जेपेत्तो ने कहा।

"और पापा वह लकड़ी का पुतला कहां गया?" पिनोकियो ने कहा।

"वह पड़ा है।" जेपेत्तो ने उंगली से दिखाया।

पिनोकियो कुछ देर उसे देखता रहा। फिर बोला, "पापा! जब मैं कठपुतला था तो कितना भद्दा दिखता था। अब तो मैं एकदम अच्छा लड़का बन गया हूं।"

• •